मासिक पत्रिका

मूल्य १०/-

# मान मंदिर बरसाना

वर्ष ०९, अंक १०, श्रीकृष्ण सं.५२५१, 'आश्विन-कार्तिक' वि.सं. २०८२ (अक्टूबर २०२५ ई.)

माताजी गौशाला में आयोजित हुई 'रामकथा' में संत-वैष्णवजनों का आगमन हुआ

## अनुक्रमणिका


| विषय- सूची | पृष्ठ- संख्या |
|---|---|
| १ परम रसमय 'ब्रजभूमि' | ०५ |
| २ 'गौ-सेवा-भक्ति' की कथाएँ | १० |
| ३ परम प्रेरक 'श्रीसंत-वचनामृत' | ११ |
| ४ महाराष्ट्र के महाप्रभु 'श्रीनामदेवजी' | १६ |
| ५ श्रीब्रज-संरक्षक 'बाबाश्री' | २१ |
| ६ परम निधि 'श्रीब्रज' | २९ |


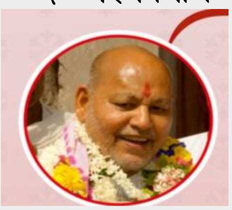

## ।। राधे किशोरी दया करो ।।

**हमसे दीन न कोई जग में,**
**बान दया की तनक ढरो ।**
**सदा ढरी दीनन पै श्यामा,**
**यह विश्वास जो मनहि खरो ।**
**विषम विषयविष ज्वालमाल में,**
**विविध ताप तापनि जु जरो ।**
**दीनन हित अवतरी जगत में,**
**दीनपालिनी हिय विचरो ।**
**दास तुम्हारो आस और की,**
**हरो विमुख गति को झगरो ।**
**कबहूँ तो करुणा करोगी श्यामा,**
**यही आस ते द्वार पर्‌यो ।**


INSTAAL करें --- PLAY STORE से-----

**MAANINI APP**

**बाबाश्री** के सत्संग/कीर्तन/भजन, साहित्य, आदि यहाँ से FREE - DOWNLOAD कर सकते हैं व सुन सकते हैं ।


**श्रीमानमंदिर की वेबसाइट www.maanmandir.org के द्वारा आप प्रातःकालीन सत्संग का ७.३० से ८:३० बजे तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६:०० से ८:०० बजे तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं ।**


**संरक्षक- श्रीराधामानबिहारीलाल ,**
**प्रकाशक – राधाकान्त शास्त्री, मानमंदिर ,गह्वरवन, बरसाना, मथुरा** (उ.प्र.)
mob. **राधाकांत शास्त्री** .......9927338666,
Website :www.maanmandir.org ,
(E-mail :info@maanmandir.org)


**परम पूज्यश्री रमेश बाबा महाराज जी द्वारा सम्पूर्ण भारत को आह्वान –**
**"मजदूर से राष्ट्रपति और झोंपड़ी से महल तक रहने वाला प्रत्येक भारतवासी विश्वकल्याण के लिए गौ-सेवा-यज्ञ में भाग ले ।"**

*** योजना ***

**अपनी आय से १ रुपया प्रति व्यक्ति प्रतिदिन निकालें व मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक अथवा वार्षिक रूप से इकट्ठा किया हुआ सेवाद्रव्य किसी विश्वसनीय गौसेवा प्रकल्प को दान कर गौरक्षा कार्य में सहभागी बन अनन्त पुण्य का लाभ लें । हिन्दूशास्त्रों में अंशमात्र गौसेवा की भी बड़ी महिमा का वर्णन किया**

विशेष:- इस पत्रिका को स्वयं पढ़ने के बाद अधिकाधिक लोगों को पढ़ावें जिससे आप पुण्यभाक् बनें और भगवद्-कृपा के पात्र बनें । हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है – **सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ । जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि ।।**(श्रीमद्भागवत३/७/४१)
अर्थ:- भगवत्तत्त्वके उपदेश द्वारा जीव को जन्म-मृत्यु से छुडाकर उसे अभय कर देने में जो पुण्य होता है, समस्त वेदों के अध्ययन, यज्ञ, तपस्या और दानादि से होनेवाला पुण्य उस पुण्य के सोलहवें अंश के बराबर भी नहीं हो सकता ।

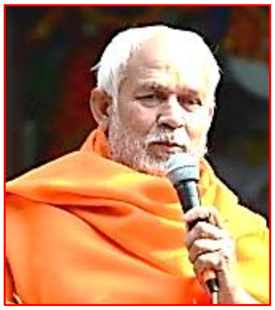

# प्रकाशकीय

जो जीवन पद्धति चलाते हैं, उसे 'संस्कार' कहते हैं । ऐसे संस्कार जो जीव की हर क्रिया को चलाते हैं, 'संस्कृति' कहलाती है । जैसे - जिस परिवार में भक्ति होती है तो वहाँ भक्ति के संस्कार हैं । ब्रज की संस्कृति वह है जो ब्रज को चलाती है, ब्रज के जीवन को चलाती है । ब्रज की उपासना करने के लिए ब्रज की संस्कृति को समझना बहुत जरूरी है । ब्रज की संस्कृति प्रेममयी है । ब्रज की संस्कृति इतनी उदार और प्रेममयी है कि वहाँ तेरा-मेरा मिट जाता है ।

आज भी हम देखते हैं कि ब्रजवासियों के द्वार पर कोई भी साधु लाल, पीले, सफेद कपड़ों वाला या किसी भी सम्प्रदाय का आ जाये तो वह खाली हाथ नहीं जाता । ब्रज का सच्चा उपासक वही है जो उनकी तरह ही उदार व प्रेम सिखाने वाला बन जाये । अगर एक शब्द में पूछा जाये कि ब्रज-संस्कृति क्या है ? जैसे कि अगर एक शब्द में पूछा जाये कि गीता क्या है? "निष्काम कर्म योग" एक शब्द में गीता है । वैसे ही एक शब्द में 'परमेश्वर का साधारणीकरण' ब्रज-संस्कृति है । जहाँ सर्वशक्तिमान ब्रह्म भी आकर साधारण बन जाता है । जहाँ परमेश्वर ने अपना समस्त ऐश्वर्य छुपाकर किसी को ये भी नहीं पता लगने दिया कि वह परमेश्वर हैं । इसलिए अगर हमको भी ब्रज-उपासक बनना है तो हम भी साधारण बनें । ब्रज-संस्कृति का प्रभाव केवल जीव पर ही नहीं पड़ता अपितु जड़ व चेतन पर भी पड़ता है । ब्रज-संस्कृति में इतना प्रेम था कि यहाँ शेर और हिरन एक साथ खेलते थे । परस्पर विरोधी जीव भी एक साथ प्रेम से रहते थे । किसी में भी राग-द्वेष नहीं था । स्वयं श्यामसुंदर कहते हैं –

**नृत्यन्त्यमी शिखिन...................... सतां निसर्गः ॥** (श्रीभागवतजी १०/१५/७)

"देखो जब भी हम यहाँ पर आते हैं तो यहाँ मयूर नाचने लग जाते हैं, हिरणियाँ प्रेम दिखाने लग जाती हैं, कोयलें मीठा-मीठा गीत गाने लग जाती हैं ।" मतलब कि ब्रज की संस्कृति इतनी प्रेममयी है कि पशु-पक्षी भी प्रेम से स्वागत करने लग जाते हैं । अगर किसी और जगह पर जाओ तो चिड़ियाँ भाग जाती हैं, कोयलें भाग जाती हैं, मयूर भाग जाते हैं । गोपालजी बोले कि "हम जंगल में आये हैं, इनके घर में आये हैं इसलिए ये सब हमारा स्वागत कर रहे हैं ।" ब्रज की संस्कृति केवल प्रेममयी है, उसमें जरा-सी भी बनावट नहीं है, जरा-सा भी दिखावा नहीं है ।

ब्रजभाव उसे ही कहते हैं, जहाँ ऐश्वर्य लीन हो जाता है । जब तक मन में हिचक है, तब तक ब्रजभाव नहीं समझा जा सकता । जब कोई व्यक्ति सोचता है कि ये भगवान् हैं तो उसके मन में हिचक, संकोच, भय रहता है ।

प्रेम की शक्ति क्या है ? प्रेम वह शक्ति है जो दोनों को एक बराबरी पर ला देती है । अगर राजा का भी लड़का है तो उसे दूसरों से खेलते समय उनके बराबर बनना पड़ेगा, वैसा ही बनना पड़ेगा, सारी क्रियाऐं बराबर करनी पड़ेंगी; उसके बिना खेल नहीं चलेगा । परमात्मा भी भक्तों से लीला तभी करता है जब परमात्मापन को छोड़ देता है । 'भक्त व भगवान्' दोनों एक ही स्तर पर आ जाते हैं उसे प्रेम कहते हैं । जब किसी भी भक्त के अन्दर प्रेम की लहर आती है तो उस लहर में वह भूल जाता है कि ये भगवान् हैं; तब समझ लो कि प्रेम शुरू हो गया है ।

**कार्यकारी अध्यक्ष**

राधाकान्त शास्त्री

श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

# परम रसमय 'ब्रजभूमि'

**भावाभिव्यक्ति –**

**अध्यक्ष – डॉ. श्रीरामजीलालजी शास्त्री,**

**श्रीमानमंदिर सेवा संस्थान ट्रस्ट**

कृष्ण टेढ़े हैं, पर कहाँ? सिर्फ ब्रज में ! गोपियाँ बोलीं – "देखो कृष्ण ! तुम कुटिल हो, धूर्त हो । सज्जन सरल होते हैं ।" शास्त्र कहते हैं कि धूर्त वह होता है जो मन में रखता है कुछ और, बोलता है कुछ और, करता है कुछ और, जैसे कि आजकल के नेता । अन्तःकरण एक शीशा है, विकार उसे टेढ़ा कर देते हैं । गोपियाँ कहती हैं कि तुम्हारे तो सब काम टेढ़े हैं । तुम्हारा स्वभाव टेढ़ा, कर्म टेढ़ा और स्वरूप भी तीन जगह से टेढ़ा है और जो तीनों जगह से टेढ़ो होय वो दुष्ट होय । टेढ़ापन होना निन्दा की बात है और सीधापन होना साधुता की बात है । अब ये जानना है कि भगवान् टेढ़े क्यों हैं?

भगवान् के अनेक अवतार हैं – नर, बामन, राम आदि किन्तु कृष्ण रूप में ही टेढ़े क्यों बने? जबकि टेढ़ापन निन्दा की बात है । तो कहते हैं - हर चीज का रहस्य होता है । भगवान् की हर बात बड़ी गूढ़ होती है, रहस्य की होती है, इसको भक्तलोग ही जान सकते हैं । इसका उत्तर ये है कि कृष्ण टेढ़े हैं, पर कहाँ? सिर्फ ब्रज में ! मथुरा के कृष्ण टेढ़े नहीं हैं, द्वारिका के कृष्ण टेढ़े नहीं हैं । आप दर्शन कीजिये, द्वारिका के कृष्ण सीधे-सीधे खड़े हैं । मथुरा के कृष्ण भी सीधे हैं । मथुरा में सारी लीलायें सीधे होकर कीं । सब जगह सीधे हैं श्रीकृष्ण, केवल ब्रज में ही टेढ़े हैं तो कोई तो कारण होगा ?

ब्रज में टेढ़े क्यों बने ? क्योंकि प्रेमलीला ब्रज में हुई इसलिए ब्रज में कृष्ण टेढ़े बने । कृष्णावतार में भी कृष्ण ने तीन तरह की लीलाएँ कीं; पहली है ब्रज लीला, दूसरी है मथुरा लीला, तीसरी है द्वारिका लीला । ब्रज में भगवान् की प्रेम-लीला का आरम्भ होता है । इस लीला में भगवान् बहुत चतुर व स्वतन्त्र हैं । वहाँ किसी प्रकार के वेद-शास्त्र का बन्धन नहीं है, ये प्रेम की लीला है । गोपियाँ कहती हैं – "उसके टेढ़ेपन में ही रस का विस्तार है । ये टेढ़ापन ही प्रेम का स्वरूप है ।" इस टेढ़ेपन के कारण ही गोपियाँ मात खा गयीं । गोपियाँ कहती हैं "देख, कृष्ण की लटूरियाँ भी टेढ़ीं हैं । जैसौ आप टेढ़ो है वैसे ही टेढ़े बालों को सिर पे बैठा लिया है । टेढ़ो है तो टेढ़ी चीज ही पसंद करे । टेढ़न से ही प्यार करै ।"

देखो, सूरदास जी कहते हैं कि जब उद्धव जी ब्रज में आये तो देखा, प्रेम में तो बड़ा कष्ट उठाना पड़ता है, यह देखकर वे गोपियों से बोले कि "तुम लोग कृष्ण को याद कर रही हो, दुःखी हो रही हो, प्रेम में किसको सुख मिला? इसलिए हे गोपियो ! श्रीकृष्ण को अपने हृदय से हटा दो, उसे भूल जाओ ।" गोपियाँ बोलीं, "देखो उद्धव ! तुम यह कह रहे हो कि भूल जाएँ, भूल कैसे जाएँ? जब कोई चीज सीधी-सीधी घुसे तो झट निकल आवै ।"

कोई दुश्मन को छुरा मारे यदि वह सीधा छुरा निकाल ले तो वो नहीं मरेगा । छुरा मारकर, छुरा को टेढ़ा करके निकाले तो वह मर जाता है । (उर में माखन चोर गड़े ...)

गोपी बोली, "कृष्ण को हृदय से कौन निकाले? कृष्ण सीधा होता तो निकल जाता पर वो तो टेढ़ा है । एक जगह से नहीं तीन जगह से टेढ़ा है । टेढ़ा कैसे निकले?" गोपी बोली, "उद्धव ! कृष्ण टेढ़े हैं । जब टेढ़ी चीज हृदय में अड़ जाती है तो नहीं निकलती है ।" गोपी कहती है कि जैसे हत्यारा बैन बजाता है, उसे सुनकर हिरणियाँ दौड़ीं आती हैं तो वो चाकू से उसे जिन्दा मारकर कस्तूरी निकाल ले जाता है । वैसे ही श्रीकृष्ण ने हमारे साथ किया है ।

ये कस्तूरी क्या है? "हमारा हृदय, इसने हमारे हृदय को चुरा लिया है । हत्यारे की बैन की तरह कृष्ण की वंशी थी और हम अनाथ बेचारी हिरणियाँ हैं जो मारी गयीं । इसकी मीठी-मीठी बातें सुन हम लुट गयीं । हमने अपना सब कुछ दे दिया, हमें मिला क्या? केवल दुःख ।"

श्रीकृष्ण टेढ़ो इसलिए भी है जैसे – देखो, कोई वस्तु कहीं से निकालनी हो तो बिना टेढ़े हुए नहीं निकलती । मानो आपको घी निकालना है तो सीधी उंगली से तो कुछ नहीं आयेगा, टेढ़ी उंगली से ही घी निकलेगा । यानि कोई चेष्टा

करनी पड़ती है । जैसे किसी बच्चे को हँसाने के लिए भी हमें क्रिया करनी पड़ती है, ताली बजानी पड़ती है । तो बल्लभाचार्य जी बता रहे हैं कि श्रीकृष्ण तीन जगह से टेढ़े क्यों हैं? "भगवान् अपने हृदय का रस निकालने के लिए टेढ़े हो जाते हैं, ये उनकी अदा है ।" जैसे किसी वस्त्र को निचोड़ने पर उसमें से रस निकलता है, उसी तरह से ये अदा होती है कि नायक किस ढंग से खड़ा है? इससे रस पैदा होता है । वैसे ही श्रीकृष्ण अपना रस बाहर स्थापित करते हैं । गोपीजनों को रस देने के लिए उस समय वे त्रिभंगी गति से खड़े हो जाते हैं । ये जो नट वेष है ये सिर्फ ब्रज में है । कंस की नगरी में क्यों टेढ़े होंगे? वहाँ किसको रिझायेंगे? ये तो ब्रज में ही श्रीकृष्ण रिझाते हैं, नहीं तो सारा संसार तो श्रीकृष्ण को रिझाता है ।

विदुरजी ये देखकर हैरान थे कि सारा संसार तो कृष्ण को रिझाता है और कृष्ण गोपियों को रिझाते हैं । कैसे रिझाते हैं? कृष्ण जैसे ही देखते थे कि गोपियाँ आ रही हैं, बस उन्हें देखते ही उनकी चाल बदल जाती थी । श्री लक्ष्मी जी जिनकी आराधना करती हैं वे श्रीकृष्ण गोपियों को रिझा रहे हैं । जिन्हें सब लोग, ऋषि-मुनि, योगी आदि स्तुतियाँ कर-कर मनाते हैं पर मना नहीं पाते और यहाँ ब्रज में उल्टा गोपियाँ फटकार रही हैं । गोपियों की दासता करते हैं, पर यहाँ प्रसन्न हैं । ब्रज की संस्कृति विशुद्ध प्रेममयी है । अगर हम ब्रज को समझ नहीं पाये तो उपासना क्या करेंगे ? बाबाश्री जब ब्रज में आये थे तो एक बम्बई से आदमी आये, वह बाबा को पहिनने के लिए एक बढ़िया मखमल का शॉल दे गये । श्रीबाबा उसे पहनकर भिक्षा (मधुकरी) माँगने चले गये । जहाँ-जहाँ माँगने जाएँ, वहीं ब्रजवासी कहें कि बाबा ये तो बहुत बढ़िया है, इसे हमें दे दो । दो-चार बार सुना, फिर उतारकर एक गरीब की बेटी की शादी थी, उसे दे दिया । बाद में ये सब 'बाबा' ने बड़े बाबा (गुरुदेव श्रीप्रियाशरणजीमहाराज) को जाकर बताया । बड़े बाबा बोले कि ये तो स्वयं सोचना चाहिए कि तुम भिक्षा माँगने गये हो । देने वाले की तो धोती फटी है और तुम बढ़िया मखमल पहनकर माँगते हो, तुमको खुद विचार करना चाहिए ।

बाबा कहते हैं कि हमने अपने सामने ऐसे-ऐसे ब्रजवासी देखे हैं जो कि एक पाँव में जूता है और चले जा रहे हैं । अगर पूछा कि "ये क्या बाबा ! दूसरा नहीं है क्या ?" बोले – "अरे ! एक तो है ना ।"

ब्रजभाव (ब्रजप्रेम) की संस्कृति माधुर्यमय है । जब अर्जुन को श्रीकृष्ण ने विराट् रूप दिखाया तो अर्जुन बोले कि आपका रूप देखकर हमें पता नहीं चल रहा है कि पूरब किधर है और पश्चिम किधर है? और ना ही हमें सुख मिल रहा है । आप प्रसन्न हो जाओ और आप अपने इस ऐश्वर्य रूप को ढक लो, इसे हटा लो ।

**अदृष्टपूर्वं हृषितो......................जगन्निवास ॥** (श्रीगीताजी ११/४५)

"मैंने आपका ऐसा रूप कभी भी नहीं देखा । हमारा मन भय से काँप रहा है, मुझे अपना वो ही पहला रूप दिखा दो ।" भगवान् हँस गये । सबसे मीठा रूप भगवान् का ऐसा ही है । संसार में जहाँ-जहाँ भी जाओ, श्यामसुन्दर को ब्रह्म, पुरुषोत्तम कहकर और हाथों को जोड़कर स्तुति करते हैं । ब्रज के बाहर कहीं भी जाओ तो बोलते हैं कि भगवान् की जय लेकिन ब्रज में ऐसा नहीं बोलते । ब्रज में कहेंगे कि बोल नन्द के लाला की जय । भगवान् की जय नहीं, सीधे-सीधे बाप का नाम लेते हैं । जो गाली प्रेम से दी जाती है, वह प्रेम बढ़ाती है; इसीलिए ये प्रेम भरी गाली भगवान् को प्रिय लगती है । भगवान् स्वयं भक्तों के आधीन होकर के भक्तों की गाली पसंद करते हैं । भक्त जब श्याम सुंदर को कुछ सुनाते हैं तो वह सुनकर बड़े प्रसन्न होते हैं । जिसमें कोई बनावट नहीं है, जिसमें कोई स्तुति नहीं है, ये है ब्रज का प्रेम । जहाँ पर ये सब चीजें हैं वहाँ पर प्रेम नहीं है । जैसा प्रेम ब्रज में है वैसा प्रेम ऐश्वर्य में नहीं है । जहाँ ये भगवान् हैं और हम जीव हैं, ये फर्क मिट जाता है उसे प्रेम कहते हैं । प्रेम में दोनों समान हो जाते हैं, ये प्रेम की शक्ति है । 'एवं संदर्शिताह्यंग......सेश्वरं वशे ॥' (भा. १०/९/१९) ब्रज का सच्चा उपासक कहता है - **'कहीं मान प्रतिष्ठा मिले ना मिले अपमान गले सों बँधाना पड़े । जल भोजन की परवाह नहीं करके व्रत जन्म गँवाना पड़े । अभिलाषा नहीं सुख की कुछ भी दुःख नित्य नवीन उठाना पड़े । ब्रजभूमि के बाहर किन्तु प्रभो ! हमको कभी भूल न जाना पड़े ॥'** ब्रज में तो परमेश्वर भी गाली खाता है । इसी का नाम ब्रज उपासना है । ब्रज उपासक बनना है तो सम्मान की भूख नहीं रखनी चाहिए, गँवार बन जाओ । किसी

ने अपमान कर दिया तो हँस जाओ । जो गँवार नही बना उसे ब्रज रस नहीं मिलेगा । अरे, ब्रज में जब भगवान् ने अपना भगवान् पना छोड़ दिया तो फिर हम लोग क्या चीज हैं? यहाँ आकर के भी जो सम्मान सोचता है उसे ब्रज रस नहीं मिलेगा । यहाँ तो अपमान सहने के लिए ही आओ । ब्रज में इसीलिए आओ कि ब्रजवासी हमको गाली दें । **'तजि देह को गेह को नेह सबै, बसिये सुख सों चल कुँज गली ॥'** ये सोचकर चलो कुँज गली । घर को, सबको छोड़कर चलो वहाँ । क्यों वहाँ क्या मिलेगा ? वही मिलेगा जो अब तक नहीं मिला । वहाँ नित्य कृष्ण-रस राधा-रस लुटता है । ये कहीं बाहर नहीं मिलेगा । मान-सम्मान से नहीं मिलेगा । बाहर तो चौरासी लाख योनियाँ मिलेंगी । तुम मूर्ख हो जो सम्मान चाहते हो । ब्रज की मिट्टी को रजरानी कहते हैं । क्यों ? उसका कारण है - गंगाजी तो एक बार श्रीकृष्ण के चरणों के धोवन से प्रगट हुई थीं । यहाँ की रज को तो श्रीकृष्ण रोज चाटते हैं, खाते हैं । मईया कहती है कि "तू यहाँ की मिट्टी क्यों खाता है?" तो बोले – **'ऐसो स्वाद नहीं माखन में, जो रस है ब्रज रज चाखन में ॥'** यहाँ भगवान् नंगे पाँव चलते थे । तभी गोपियों ने कहा था "इतना लक्ष्मी जी के सुन्दर-सुन्दर कोमल हाथों से पैर दबवाने में उनको आनंद नही मिला, जितना ब्रज के काँटों में मिला । जितना ब्रज के कंकणों में मिला ।" ये हालत भगवान् की है । फिर हम जैसे जो लोग हैं, वे न जाने अपने मन में क्या बनते हैं ? **'यद्येवं तर्हि व्यादेहीत्युक्तः... क्रीडामनुजबालकः ॥'** (भा. १०/८/३६) अरे, यहाँ तो भगवान् ने तक अपनी भगवत्ता छोड़ दी, फिर प्रेम मिला । सम्मान में मरते जाओ तो प्रेम आदि कुछ नही मिलेगा, सिर्फ चौरासी लाख योनियाँ ही मिलेंगी । **'यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं...............धीर्भवदायुषां नः ॥'** (भा. १०/३१/१९)

गोपियाँ बोलीं कि "ये वही कृष्ण हैं, जिनके चरणों को लक्ष्मी जी धीरे-धीरे दिन-रात सहलाती हैं । क्यों? क्योंकि हमारे हाथ तो कठोर हैं और प्रभु के चरण कोमल हैं । लक्ष्मी जी जैसा उनके चरणों का लालन करती हैं और जैसा प्यार करती हैं वैसा कोई भी नहीं कर सकता पर ब्रज में भगवान् काँटों में दौड़ते हैं, ब्रज में गँवारों के साथ भगवान् भी गँवार बन गये हैं ।" इस ब्रज में आकर जो गँवार नहीं बना वह ब्रज भाव नहीं जान पाया ।

सब लोग पैसा चाहते हैं । मन्दिर वाला पैसा चाहता है, पुजारी पैसा चाहता है, चोर पैसा चाहता है, कथा करने वाला पैसा चाहता है, कीर्तन करने वाला पैसा चाहता है, पापी पैसा चाहता है, सब पैसा चाहते हैं । पर वह लक्ष्मी सब छोड़कर क्या चाहती हैं ? **'जयति तेऽधिकं.......विचिन्वते ॥'** (भा. १०/३१/१) वे तो वृन्दावन विहारी लाल के चरणकमलों की रज चाहती हैं । इसका एक अर्थ ये भी है कि जो पैसा चाहता है, उसको ब्रज रस नहीं मिलेगा ।
**'नेमं विरिञ्चो......विमुक्तिदात् ॥'** (भा. १०/९/२०) जब महालक्ष्मी को नहीं मिला तो जो हम जैसे मक्खी-मच्छर क्या चीज हैं ? जब तक तुम्हारे मन में पैसे की तृष्णा है तब तक ब्रज रस नहीं मिलेगा । ये बात समझ लो कि कोई भी गोपी भगवान् के ऐश्वर्य रूप पर मोहित नहीं हुई । ब्रजमण्डलान्तर्गत पैंठे गाँव में भगवान् चतुर्भुज रूप से प्रगट हुए तो गोपियाँ डर गयीं और उनसे बोली भी नहीं । गोपियाँ प्रभु को छोड़ के चली गयीं । ब्रज में प्रेम का विकास है । यहाँ कृष्ण वनों में घूम रहे हैं, बिना बुलाये सब जगह चले जाते हैं । घर-घर चोरी करते हैं, उनमें कोई भी बड़प्पन नहीं है । गायों की सेवा करते हैं, ग्वालबालों की सेवा करते हैं, गोपियों की सेवा करते हैं । प्रेम है यहाँ । ये वही ब्रज है । परन्तु हमें इसी ब्रज में वह रूप दिखाई नहीं देता जिसका वर्णन महात्माओं ने किया है । **'धनि–धनि वृन्दावन के रूख । रसिकन पारिजात यह दीखत, विमुखन ढाक पिलूक ॥'** हमें तो हर जगह गंदगी दिखाई देती है, ब्रजवासियों में भी विकार दिखाई देते हैं । तो ये हमारे भाव कैसे पकें? भाव में एकरसता कैसे आये? एकरसता माने एक स्वभाव । फिर जीव हिलता नहीं, डिगता नहीं । कच्चे साधक तो करोड़ों हुए पर परमात्मा तक पहुँचना वो एक अलग बात है । भगवान् से मिलने की ये बड़ी टेढ़ी-मेढ़ी राह है । कैसा रास्ता है? जैसे दुनिया में हर रास्ते का हिसाब मालूम होता है । मानलो बॉम्बे जाना है तो बोले इतने समय में पहुँच जाओगे परन्तु इस प्रेम के रास्ते पर न शुरुआत है और न बीच है और न ही अंत है । कौन से स्टेशन से जाना है? कितनी दूर है? कितना बाकी है? कुछ पता नहीं । हम लोग ऐसे रास्ते पर चल रहे हैं और अन्धे हैं । मुश्किल तो ये है कि आँख भी नहीं हैं । मतलब ज्ञान और विवेक की आंखें भी नहीं हैं । हम टटोल-टटोल कर अन्धों की तरह

चल रहे हैं । गीता में भगवान् स्वयं कहते हैं कि भजन के लिए तो बहुत लोग निकलते हैं, बहुत लोग प्रयत्न करते हैं लेकिन उनमें एकाध ही सिद्ध होता है, उन सिद्धों में कोई एकाध ही मुझको जान पाता है ।

**'मनुष्याणां सहस्रेषु................वेत्ति तत्त्वतः ॥'** (श्रीगीताजी ७/३)

किसी ने बड़ा सुन्दर कहा है कि ये प्रेम की डगर है यानि प्रेम का रास्ता है जिस पर सब चलना चाहते हैं या चल रहे हैं किन्तु ये रास्ता कैसा है? ये बड़ा टेढा मेढा है । **"बड़ी रे टेढ़ी-मेढ़ी प्यारे श्याम तेरी राह ।"** सतत् सेवन केवल धाम का ही सम्भव है । जिस पाप व कष्ट को अन्य साधन नष्ट नहीं करते, उसे धाम नष्ट कर देता है । श्रीपाद प्रबोधानंद जी ने तो यहाँ तक कह दिया कि यदि कोई पतित, नीच या साधनहीन भी है और यदि वह भी निष्ठा से धाम का आश्रय ले ले तो वह अवश्य धामी से मिल जायेगा । किसी वस्तु का सतत् सेवन ही सिद्धि प्रदान करा सकता है । सतत् सेवन केवल धाम का ही सम्भव है । अन्य साधनों में बाधायें उपस्थित होती रहती हैं । धाम निष्ठा बड़ी विचित्र होती है । धाम में तो सोना भी भजन है । जिसके पास धन है तो वो धन देगा, भोगी भोग देगा, ज्ञानी ज्ञान देगा, भक्त भक्ति देगा, धाम निष्ठा वाला धाम निष्ठा देगा, हर जीव संसार को कुछ न कुछ देता है परन्तु देता उसी वस्तु को है जो उसके पास होती है । प्रकृति के अनुसार ही जीव जीव का संग करता है, 'कामी' कामी का संग करता है, 'लोभी' लोभी का संग करता है, तुम जैसा संग करोगे वैसी ही तुम्हारी बुद्धि या प्रकृति बन जायेगी । इसीलिए अपना संग सोच समझ कर करो । श्रद्धा वाले का संग करने से श्रद्धा बढ़ेगी । तभी तो जीव को जितना एक भक्त का संग पवित्र करता है, उतना गंगा भी पवित्र नहीं कर सकती । धाम निष्ठा के लिए निष्ठावान् का ही संग करें । निष्ठावान् पुरुष का सीधा अंतरात्मा पर संक्रमण होता है । जो निष्ठा लाखों जन्मों के साधनों से नहीं मिलती, वह सहज में ही निष्ठावान् के संग से मिल जाती है । ब्रज धाम दिव्य है, ब्रज धाम के रज कणों को वैकुण्ठ से भी ऊँचा माना गया है । यहाँ की भूमि का कण-कण श्री राधा-कृष्ण के प्रेम चिन्हों से मंडित है ।

सत, रज, तम इन तीनों गुणों से अतीत जो व्यापक परब्रह्म है, वही ब्रज है । यह सच्चिदानन्द स्वरूप, परम ज्योतिर्मय और अविनाशी है । जीवनमुक्त पुरुष इस व्यापक परब्रह्म में निवास करते हैं ।

**गुणातीतं परं ब्रह्म व्यापकं ब्रज उच्यते । सदानन्दं परं ज्योतिर्मुक्तानां पदमव्ययम् ॥** (भा.मा. १/२०)

परम ब्रह्म स्वरूप ब्रज धाम श्रीकृष्ण की नित्य निवास स्थली है । श्रीकृष्ण आत्माराम सच्चिदानन्दमय होकर ब्रज में भक्तों के लिए सहज में ही सुलभ हो जाते हैं । श्रीराधा भगवान् की आह्लादिनी शक्ति हैं; लावण्य, माधुर्य तथा प्रेम की साक्षात् मूर्ति श्रीराधा के साथ रमण करने के कारण ही श्यामसुन्दर आत्माराम कहलाते हैं । ब्रज का कण-कण श्री युगल सरकार के चरणों से अंकित व उनकी रस माधुरी से सिंचित है । यहाँ का प्रत्येक कण मुक्ति को भी मुक्त करने वाला है ।

**मुक्ति कहै गोपाल सों, मेरी मुक्ति बताय । ब्रज-रज उड़ि मस्तक लगै, मुक्ति मुक्त है जाय ॥**

ब्रजधाम के कण-कण में श्रीकृष्ण के स्वरूप का दर्शन पाकर स्वयं ब्रह्मा जी माया मोहित हुए थे और भाव विभोर हुए अपने नयनाश्रुओं से यहाँ के रज कणों का अभिषेक करने के लिए बाध्य हुए थे । ज्ञानी उद्धव जी ने भी इस ब्रज रज में लता बनना अपना परम सौभाग्य माना था । **'आसामहो चरणरेणु......श्रुतिभिर्विमृग्याम् ॥'** (भा. १०/४७/६१)

स्वयं विश्वामित्र, नारद, शुकदेव, गौतम, परशुराम आदि मुनियों ने इसी ब्रज चौरासी को अपनी तपस्या स्थली बनाया । आज भी करोड़ों भक्तजन यहाँ आकर अपनी आराध्या ब्रज भूमि के दर्शन कर अपने को धन्य समझते हैं जो कि उनकी भक्ति की आस्था का केंद्र है ।

**बाबाश्री के शब्दों में** – "धाम की महिमा को जब ब्रह्मा आदि भी नहीं जान पाते हैं तो उसके बारे में हम क्या बोलें? परन्तु शिष्टाचार के नाते कुछ कह रहे हैं । पहले हम जानते तो कुछ भी नहीं थे, ऐसे ही भाषण किया करते थे । कभी जयपुर जाते और कभी अलवर जाते । उस समय हम जयपुर व अलवर भाषण करने गये थे और बड़े आश्चर्य की बात है कि अलवर में एक ही दिन में कार में घूम-घूमके रात के दो बजे तक ३३ जगह हमारे भाषण हुए थे, वह हमारा आखिरी दौरा था । ज्यादा तो हमें याद नहीं पर एक आखिरी घर में सत्संग हो रहा था तो वहाँ हमें याद है कि हमसे तेरह प्रश्न पूछे

गए थे । तेरहवाँ प्रश्न था कि ईश्वर प्राप्ति कैसे हो? हम इसे एक अनुभव तो नहीं कह सकते लेकिन जब हम इसका उत्तर देने लगे तो कुछ ऐसी घटना घटी कि हमारी जबान रुक गयी ।

जबान इसलिए नहीं रुकी कि हम बीमार थे । हृदय में एक बात खटकी कि क्या तुमको भगवान् मिल गये हैं, जो तुम बोल रहे हो । बड़ी अजीब घटना घटी और हम थोड़ी बेचैनी सी महसूस करने लगे । वहाँ से हम निकलकर अपने कमरे में चले गये । जिसके घर में ठहरे थे उनसे हमने कहा कि माथुर जी आपकी गाड़ी कहाँ है? तो माथुर जी बोले गाड़ी तो आपके लिए तैयार खड़ी है । हमने पूछा कि क्या तुम अभी हमें ब्रज के पास छोड़ सकते हो? वे बोले ऐसा कैसे हो सकता है? कल आपका कार्यक्रम है । हमने कहा कि हम तो जायेंगे, हमें कुछ बेचैनी सी हो रही है । तुम नहीं छोड़ोगे तो हम पैदल ही चले जायेंगे । जो हमारे साथ महात्मा रहते थे वह भी हमारे साथ गये हुए थे और वे तो बड़े नाराज हुए और कहने लगे कि क्या तुम पागल हो गये हो? हमने कहा कि हाँ हम कुछ पागल से ही हो गये हैं । फिर उनकी गाड़ी में जब हम डीग के पास आये तो हमने उनसे कहा कि आप अपनी गाड़ी वापस ले जाओ, अब ब्रज आ गया है लेकिन वो हमें जबर्दस्ती मान मंदिर तक छोड़ गये ।

अगले दिन हम छत पर बैठे थे और एक महात्मा को अपने प्रोग्राम का कागज दिखा रहे थे । इतने में हमारे बाबा (श्रीप्रियाशरणजीमहाराज) यूँ ही टहलते-टहलते मन्दिर में आ गये । बाबा से हमारा यह नया-नया परिचय था । धाम की महिमा हमारे जीवन में यहाँ से शुरू होती है । उन्होंने कहा कि "भाई क्या हो रहा है?" हमने कहा, "बाबा हम अभी जयपुर से अलवर तक प्रोग्राम करके आये हैं, वहाँ से ये चिट्ठियाँ आयीं हैं इनको पढ़ रहे हैं ।" उन्होंने हमारी तरफ देखा और बोले, "भड़ुआ ! ये चिट्ठियाँ ही पढ़ोगे, घर से तुम भजन करने निकले हो या यही पापड़ बेलने?" उनके ये ही शब्द थे । हमें बात कुछ अच्छी लगी और फिर हम उनके सत्संग में जाने लगे । उन्होंने हमसे कहा कि देखो जब घर से निकले हो तो धाम का आश्रय लो । वहाँ से हमारा जीवन बदला । धाम के बारे में बहुत सी बातों को पढ़ने लग गये और हमने सोच लिया कि अब हमें यहाँ से नहीं जाना हैं । हम जब ब्रज में आये थे तो सबसे पहले हमने ये ही पाठ पढ़ा था ।

भगवान् का नाम, रूप, गुण, लीला, धाम व धामी ये सब एक ही हैं किन्तु रसिक पुरुषों ने इनमें से धाम को सबसे सहज और सरल बताया है । नाम सरल तो है पर सोते समय ये स्थिति तो नहीं हो सकती कि नाम अखण्ड चलता रहे, इसी तरह से रूप चिंतन भी अखण्ड नहीं हो सकता है और लीला गुणगान भी अखण्ड नहीं हो सकता है और जन सेवा भी अखण्ड नहीं चल सकती है ।

इसीलिए महात्माओं ने कहा है कि धाम को पकड़ लो । धाम में अखण्ड निवास कर लो क्योंकि सोओगे तो भी धाम में रहोगे और जागोगे तो भी धाम में रहोगे । वृन्दावन महिमामृत में यहाँ तक लिखा है –

**दूरे चैतन्यचरणा................विना वृन्दावने रतिम् ॥**

ऐसे आचार्य तो चले गये जिनकी वायु से ही प्रेम की प्राप्ति होती थी । न महाप्रभु चैतन्य जी रहे, न हरिवंश जी महाराज रहे और न महाप्रभु हरिदास जी रहे, तो कृष्ण प्रेम की प्राप्ति कैसे हो? तो शतककार कहते हैं कि वृन्दावन की रज का आश्रय कर लो, धाम का आश्रय कर लो, तुम्हें सब कुछ मिल जायेगा । शिव पुराण में भी आता है कि अगर कुछ नहीं आता है तो धाम में आकर मर ही जाओ । रसिकों ने भी इस बात को कहा है – "वृन्दावन में मंजुल मरिबो"

**मासिक पत्रिका 'मान मंदिर बरसाना' रजिस्टर्ड डाक से मंगवाने के लिए संपर्क करें मोबाइल नं.- ८९७९३१२९२२ (डाक खर्च स्वयं वहन करना होगा)**

# ‘गौ-सेवा-भक्ति’ की कथाएँ

**भावाभिव्यक्ति - परम गौ-सेवी**
**संत ‘श्रीब्रजशरणजीमहाराज’**
**श्रीमाताजी गौशाला, श्रीमानमन्दिर सेवा संस्थान ट्रस्ट**

**भक्तमाल गोभक्ति की, मधुर कथा नाभा कही ।**
**श्रीनाथ अरु गोविन्दचन्द्रहिं गो बतलायौ । खेम गुसाँई बैल, बने हरि बैल बुलायौ ॥**
**जन गोपाल ने दूध, भरे सब पात्र दिखायौ । जगन शिष्य के कहे, गाय खूटे दिखलायौ ॥**
**केवलराम चतुरोनगन, गंग ग्वाल की कथा कही । भक्तमाल गोभक्ति की, मधुर कथा नाभा कही ॥**

श्रीभक्तमाल जी सतयुग से लेकर श्रीनाभाजी के काल तक के भक्तों का संग्रहालय है । जब वैदिक संस्कृति के यज्ञादि की विधि शिथिल पड़ गयी, उपनिषदों के प्रभाव से श्रीआदिशंकराचार्य, श्रीरामानुजाचार्य आदि आचार्यों का भी शास्त्रार्थ अद्वैत, द्वैत, विशिष्टाद्वैत, द्वैताद्वैत आदि मत-मतान्तरों में उलझ गया, तब श्रीतुलसीदासजी तथा नाभा गोस्वामी जी ने भारतीय संस्कृति का स्वरूप दर्शाने तथा परम कल्याण का सरल सुखद राजमार्ग भक्तिमार्ग दिखाने का महान कार्य किया । गोभक्तों की चर्चा करते समय सतयुग से लेकर आज तक कोई भारत में जन्मा धर्मानुयायी ऐसा नहीं दिखता जो गाय का भक्त न हो । सभी सम्प्रदायों के आचार्यों ने गाय के प्रति पूज्य भाव और उसकी महिमा को स्वीकार किया है । अतः गोभक्तों की सूची को सीमाबद्ध नहीं किया जा सकता । अनेक महत्त्वपूर्ण चरित्र भक्तमाल में ऐसे हैं, जिनकी बड़ी भारी महिमा है पर अन्तर्मुख ही रहे, अतः किसी घटना का वर्णन उनके चरित्र में नहीं है । इसी प्रकार गो के भक्त तो सभी हैं पर उनकी गोभक्ति घटना प्रधान नहीं है, अतः उसका विशेष वर्णन भला क्या किया जा सकता है ? जैसे माता-पिता के सहज पुत्र प्रेम को घटना न सुना पाने से अप्रमाणित नहीं किया जा सकता । इसी प्रकार भारतवर्ष में निवास करने वाले सनातन धर्मियों की गोभक्ति निर्विवाद है । भले ही आज के विषम वातावरण से वह प्रभावित हो रही हो पर रक्त में और स्वभाव में पूर्वजों के संस्कार स्वरूप गोभक्ति निहित है । इसलिए मेरी राय में तो सभी भक्त गोभक्त हैं, चाहे प्रकट हों या अप्रकट हों ।

**श्रीवल्लभाचार्यजी** – श्रीवल्लभाचार्यजी को जतीपुरा में श्रीनाथ जी की प्राप्ति हुई । जहाँ श्रीनाथजी भूमिगत थे, वहाँ एक गोमाता नित्य जाकर अपने चारों थनों से दूध की धारा छोड़ती थी । इस प्रकार श्री श्रीनाथजी ने अपनी उपस्थिति का संकेत दिया । श्रीवल्लभाचार्यजी ने श्रीनाथ जी को प्राप्तकर उन्हें जतीपुरा में विराजमान कर पृथु पद्धति से लाड़ लड़ाया ।

श्रीरूप गोस्वामी पाद – श्रीगोविन्दचन्द्रजी ने श्रीरूप गोस्वामी पाद को स्वप्नादेश कर बतलाया कि एक कपिला गाय मुझे सुबह शाम दूध की धारा से सींचती है । आप मुझे निकालकर स्थापित करो ।

**श्रीखेम गुसाँई** – श्री खेम गुसाँई जी परम गो भक्त थे । एक ब्राह्मण ने उनसे कहा कि – सच्चे साधु तो बैल हैं, जो खेतों में परिश्रम करके अन्न किसान को देते हैं और स्वयं भुस खाते हैं । तुम साधु कहलाकर माल खाते हो, पर कोई सेवा नहीं करते हो । मेरा एक बैल चोरी चला गया है, अब मेरी खेती कैसे होगी ? श्री खेम जी ने उसके बैल की जगह काम की स्वीकृति दी और बैल के साथ हल खींचने लगे । श्रीठाकुरजी को अपने भक्त की पीड़ा सहन नहीं हुई । उन ब्राह्मण का चोरी हुआ बैल आ गया और ब्राह्मण को सींगों से बार-बार मारने लगा । खेमजी की कृपा से वह ब्राह्मण बचा ।

**श्रीजनगोपालजी** – श्रीजनगोपालजी अपने श्री गोपालजी को सदा साथ में रखते और उन्हें खूब लाड़ लड़ाते । एक बार एक गाँव में वे गये, वहाँ उनका शिष्य रहता था । उन्होंने अपने शिष्य के घर से श्रीगोपालजी के लिए खीर प्रसाद बनाने के लिए दूध माँगा । अपनी माता से भयभीत बालक ने माता की आँख बचाकर दूध लाकर दे दिया । इतने में उसकी

माता घर में गयी और दूध के बर्तनों को खाली देखा । वह क्रोध में बड़बड़ाती हुई आई, तब जनगोपालजी ने अपने शिष्य की माँ से कहा – 'अरी मैया ! क्या हो गया है ? पहले जाकर अपने घर में बर्तनों को तो देख आ ।' वह घर में गयी और जाकर देखा कि सभी बर्तन दूध से लबालब भरे हैं । वह श्रीजनगोपालजी की महिमा समझकर प्रणत हो गयी ।

**श्रीचतुरोनगनजी नागा** – एक बार श्री नागा जी नन्दगाँव में पावन सरोवर के तट पर तीन दिन तक भूखे बैठे रहे, तब श्रीठाकुरजी ने आकर कटोरे में दूध पीने को दिया । इन्होंने दूध पीकर पानी माँगा तो श्रीठाकुरजी ने कहा कि पानी क्या पीते हो, दूध पियो । नागा जी ने पूछा कि दूध कहाँ मिलेगा ? भगवान् ने कहा – ब्रज में दूध की कमी नहीं है । घर-घर में जाकर दूध पियो । ब्रजवासी जब दूध को छिपाकर रख देते तो आप जाकर उसे ढूँढकर पी लेते थे ।

**श्रीजगनजी** – एक बार श्री जगन जी की गोमाता खो गयी । उनके शिष्य ने उसे दिन भर खोजा पर गोमाता नहीं मिली । तब उसने खीझकर कहा कि एक भक्त श्रीनामदेव जी हुए, जिन्होंने मरी हुई गाय को जीवित कर दिया और एक हमारे गुरुजी हैं, जो गाय का पता नहीं बता सकते कि कहाँ है ? तब जगनजी ने कहा कि गोमाता तो गोशाला में खूँटे से बंधी हुई है । शिष्य ने जाकर गाय को देखा और अपने गुरुजी की अद्भुत महिमा समझकर अपने अपराध के लिए क्षमा माँगी ।

**श्रीगंग ग्वालजी** – श्रीगंग ग्वालजी सन्तों की सेवा करते थे । इसे अपराध कहकर एक बार इन्हें घर से निकाल दिया गया । श्रीकृष्ण देव जी ने इन्हें अपने पास रखा । इनकी गो-गोपाल-सन्तों की सेवा बड़ी भावपूर्ण थी । इन पर प्रसन्न होकर श्रीठाकुर जी ने दर्शन दिया और वरदान माँगने के लिए कहा । गंग ग्वाल जी ने कहा कि आप यदि वर देना चाहते हैं तो वृन्दावन के कुञ्ज, गाय, गोप, गोपी आदि सभी का दर्शन हमें करा दीजिये । यही मेरी चाह है ।

**तब ता पै रीझि प्रभु पराकृत लीला सब, दिखाई सो देखि याहि नाना भाँति धारिये ।**
**गोपी गोप गाय ठाम वृन्दावन कुञ्ज धाम, नाना व्रज ग्राम ग्वालबाल परिवारिये ॥**
**और बाल भाव ख्याल और रास क्रीड़ा गाय, चारण उचारण हू वंसी कौ निसारिये ।**
**देखि-देखि सर्वभाव चाव छायौ याके मन, बोल्यो श्याम घन देखि कही जू निहारिये ॥**

(श्रीभक्तदाम गुण चित्रणी)

श्रीकृष्ण ने अपने वृन्दावन के गोपी, ग्वाल, गाय, गाँव आदि का परिचय श्री गंग ग्वाल जी को करा दिया ।

**श्रीकेवलरामजी** – गो भक्त श्री केवलराम जी परम भागवत थे । घर-घर जाकर श्रीकृष्ण नाम संकीर्तन की भिक्षा माँगते थे । एक बार कुछ दुष्टों ने इनके दया भाव को देखकर जानबूझकर एक बैल को साँटी से मारा । केवलराम जी बैल की पीड़ा को नहीं देख सके । आप बैल की पीड़ा से इतने अधिक व्यथित हुए कि तदाकार हो गये तथा उस बैल को मारी गयी साँटी का चिह्न आपकी पीठ पर अंकित हो गया । आप व्याकुल होकर पृथ्वी पर लोटने लगे ।

**करुणानिधान कोऊ सुने नहीं कान कहूँ, बैल को लगायौ सोंटौ लौटे दया आयके ।**
**उपट्यो प्रगट तन मन की सचाई अहो, भये तदाकार कहौं कैसे समुझायके ॥**

(श्रीभक्तमाल)

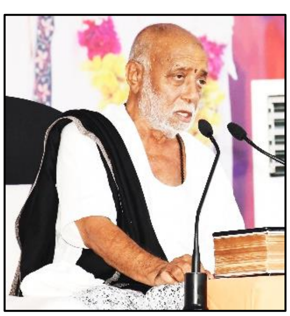

# परम प्रेरक 'श्रीसंत-वचनामृत'

**पूज्य श्रीमुरारीबापूजी की श्रीरामकथा में आये हुए संतजनों व बापूजी के संक्षिप्त भावोद्गारों से संकलित**

श्रीमाताजी गौशाला में आयोजित हुई दिव्य श्रीरामकथा का शुभारम्भ परम पूज्य श्रीबाबामहाराज व आगन्तुक संतजनों की परम पावनमयी सन्निधि में दीप-प्रज्वलन किया गया; जिसमें श्रीमलूक पीठाधीश्वर संत श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज ने सम्बोधन में अपने भावोद्गार व्यक्त करते हुए कहा – 'हमारा अपने हृदय का भाव है कि श्रीमाताजी गोशाला के गोष्ठ में जो यह दिव्य कथा आयोजित हो रही है, इसमें पूज्य बापूजी का भी ये बहुत बड़ा सौभाग्य है कि ब्रज की महान विभूति जिन्होंने ब्रज की

संस्कृति के वन-पर्वत-कुञ्ज-निकुँज-ब्रज की उपासना व गौवंश की सेवा में अपना सम्पूर्ण जीवन न्यौछावर कर दिया; ऐसे परम पूज्य श्रीबाबामहाराज की प्रत्यक्ष सन्निधि-उपस्थिति में श्रीबापू नौ दिन तक गोष्ठ में बैठकर रामकथा गायेंगे ।

भारतवर्ष के प्रसिद्ध कथा वाचक और राष्ट्रीय संत श्रद्धेय श्रीमोरारी बापू जी प्रथम बार मान मन्दिर की माताजी गोशाला में नौ दिवसीय राम कथा वाचन हेतु पधारे; उनके द्वारा कथित सुमधुर श्रीरामकथा-सिन्धु के कुछ संक्षिप्त भावोद्गार इस प्रकार हैं –

मुझे अच्छी तरह याद है, बहुत सालों पहले एक बार जब मैं बरसाना आया था तो मैं राधारानी की इस नगरी में घूम रहा था, उस समय पद्मश्रीविभूषित श्रीबाबा महाराज ने मुझसे कहा – 'बापू ! यदि आप कहें तो मैं बरसाने में आपको एक विशेष स्थान में ले चलता हूँ लेकिन मैं और आप दो व्यक्ति ही हों, कोई तीसरा व्यक्ति न हो ।' मैं बाबा महाराज के साथ चल दिया और वे मुझे अपने साथ ले गये और बरसाने की इस पावन भूमि में जिस-जिस स्थान में उन्होंने कुछ अनुभूति की है, अनुभूति तो क्या, आपने तो मुझसे यह भी कहा कि मैंने यहाँ दर्शन भी किये हैं । ऐसे दो-तीन स्थान उन्होंने मुझे दिखाए । उन लीला स्थलों को देखकर मेरी आँखों में आँसू आ गये और मैंने वहाँ की रज को अपने मस्तक पर धारण किया तथा धन्यता भी महसूस की । हम लोगों की आँख बरसाना की, ब्रजभूमि की दिव्यता, इसकी चिन्मयता को कहाँ देख पाती है जबकि बरसाने में राधारानी के अतिरिक्त और है ही क्या ? कोई जगह ही नहीं है कि कोई दूसरा आ सके । इस पावन भूमि के यथार्थ स्वरूप का दर्शन करने के लिए दिव्य दृष्टि की आवश्यकता है, जैसा कि गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने विराट स्वरूप का दर्शन कराने के पहले अर्जुन को दिव्य दृष्टि प्रदान की और कहा – दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम् । जैसे रामचरितमानस में जब विश्वामित्र जी के साथ राम-लक्ष्मण द्वारा जनकपुरी के दर्शन का प्रसंग आया तो राम जी ने विश्वामित्र मुनि से कहा – 'गुरुदेव ! लक्ष्मण जनकपुरी का दर्शन करना चाहते हैं ।' विश्वामित्र जी ने रामजी से कहा कि आप अपनी आँखों से लक्ष्मण को दर्शन करा दो । जनकपुर में तो एक सुनयना है किन्तु आपके दर्शन करने से तो सभी के नेत्र सुनयना हो जायेंगे ।

माताजी गोशाला में ६५ हजार गायों की सेवा हो रही है । मैं गत वर्ष बरसाना आया था, अब पुनः आया हूँ । जल्दी ही इस दिव्य भूमि में आने का अवसर मिल गया । मैं बाबा महाराज के दर्शन करने के लिए आया था किन्तु गोशाला में मैंने देखा कि हजारों की संख्या में गायें दौड़ती हुई आ रही हैं । यह दृश्य मेरी आँखों में बस गया । उस समय माताजी गोशाला के प्रबन्धकों-सदस्यों ने मेरे समक्ष यह बात रखी कि आपकी एक कथा का आयोजन यहाँ होना चाहिए । इससे पता चलता है कि यहाँ की कथा के पीछे कितना पवित्र हेतु है । उस समय हरीश जी ने बड़ी ही दीनता के साथ वैष्णवी संकल्प के द्वारा माताजी गोशाला में मेरी कथा के आयोजन का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और इसी कारण से आज हम सभी इस परम पावन भूमि में उपस्थित हैं । यहाँ पर कथा करने में मैं अपनी हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करता हूँ । मैं सोच रहा था कि यहाँ कथा करने के लिए मानस के किस विषय को उठाऊँ और गोमाता के स्मरण में उनकी सेवा के लिए मानस को आधार बनाकर, अन्य ग्रन्थों को आधार बनाकर, जो कुछ सन्तों से सुना है, उसको आधार बनाकर गुरु कृपा के आधार पर मैं कौन से विषय को केंद्र में रखूँ और आप सभी से संवाद रचूँ ।

अथर्ववेद के दर्शन से एक पावन सूत्र का दर्शन हुआ, जिसका नाम है 'गो सूक्त' । कोई अज्ञात चेतना के आदेश से अथवा यों कहें कि गोमाता के आदेश से यह विषय निर्णीत किया है – 'मानस गो सूक्त' । रामचरितमानस के प्रत्येक सोपान में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष गो माता का दर्शन है । किसी स्थान पर प्रत्यक्ष है, किसी स्थान पर अप्रत्यक्ष है । रामचरितमानस के हर काण्ड में गोमाता है । इसीलिए तो गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं – राम कथा सुर धेनु सम ।

गोमाता के चार चरण हैं, उसके चार थन, एक पुच्छ (पूँछ), एक मुख, दो आँखें, दो कान और दो सींग – इस तरह १६ अंग सम्पन्न है, १६ कला पूर्ण है गोमाता । पाश्चात्य विज्ञान में बताया गया है कि मनुष्य के विकास के मूल में बन्दर है अर्थात् बन्दरों से ही आगे चलकर मनुष्य की उत्पत्ति हुई है । इसके लिए वैज्ञानिक ने तर्क भी दिए हैं । एक बहुत

बड़े महापुरुष पांडुरंग दादा ने पाश्चात्य विज्ञान के इस सिद्धान्त उत्क्रान्तवाद को दशावतार के साथ जोड़ा है । उनके ग्रन्थ से मैंने यह पाया कि दशावतार ही पाश्चात्य वैज्ञानिकों के उत्क्रान्त वाद का भी आदि कारण है । ओशो (आचार्य रजनीश) ने ऐसा कहा है कि बन्दर से हम उत्पन्न हुए, अवतारों की इस श्रृंखला में विकसित होते-होते जैसे हमारे पूर्णावतार हुए भगवान् राम, भगवान् कृष्ण आदि-आदि लेकिन एक आपका वक्तव्य ऐसा रहा कि कभी-कभी ऐसा लगता है कि इसका आदि कारण गोमाता है और एक बात आपने विशेष कही कि चलो, विद्वानों की बातें मान ली, पुराणकारों की बातें मान ली, वे अपने ढंग से चलते थे लेकिन सत्य जहाँ से भी मिले, उसे ग्रहण करना चाहिए । इसलिए आपने ये तो जरूर कहा कि मानव जाति का मूल कोई भी हो, लेकिन एक बात पक्की है कि मानव को जो आँख मिली है, वह गोमाता की आँख से मिली है, जो आँख है वह गो माता है । हम सबको जो आँख मिली है वह गो की आँख है । गो सूक्त का एक मन्त्र है, जिसमें कहा गया है कि गोमाता हमारे आँगन में कल्याण की स्थापना करती है । दूसरी बात यह बताई गयी कि हमारे आँगन में, हमारे गोष्ठ में वह रहे, यह तो कल्याणकारी है ही लेकिन हमारे आँगन में रहकर, हमारे गोष्ठ में रहकर वह बोले, रंभाये, यह भी ऋषियों ने गोसूक्त में प्रार्थना की है और तीसरी बात हमारे गोष्ठ में रही गोमाता विविध रंग के, विविध रूप के, विविध रंगी बछड़े को जन्म दे, यानि गोवंश बढ़े । गो सूक्त में अंत में कहा गया कि हमारी ये गोमातायें ऊषा काल में यजन के लिए दुग्ध प्रदान करें ।

गौरी अर्थात् पार्वती, गीता यानि भगवान् श्रीकृष्ण के मुख से निकला हुआ छन्द, गायत्री – जिसको हम वेद माता भी कहते हैं, चौथा गंगाजी और पाँचवी गोमाता – ये पाँचों 'ग' हमारी आठ वस्तुओं पर प्रभाव डालते हैं ।

वैज्ञानिक लोग अपने यहाँ के या पाश्चात्य देशों के कुछ भी कहें लेकिन अंत में मूल कहाँ है, इसको खोजने के लिए वेद से लेकर रामचरितमानस तक हमें जाना ही पड़ेगा । आज का विज्ञान जो उड़ान भर रहा है, यह हम सब जानते हैं, सुनते हैं तो आश्चर्य होता है, लेकिन इसका मूल कहीं न कहीं हमारे शास्त्रों में मिलता है जो सुखमूल है, दुःख मूल नहीं है ।

श्रीबाबा महाराज ने पूज्य बापू जी की कथा के दूसरे दिन अर्थात् २१ सितम्बर, २०२५ को संध्याकालीन संकीर्तन-आराधना, जो प्रतिदिन गह्वरवन स्थित रसमण्डप में हुआ करती है, उसकी रसधारा से सभी को आप्लावित करने के लिए माताजी गोशाला 'कथा-पाण्डाल' में संध्या के समय इस रसोपासना को आयाम दिया । पूज्य बापूजी भी इस रसमयी आराधना में उपस्थित थे । श्रीबाबा महाराज के हृदयस्पर्शी सरस पदगान, उसकी व्याख्या और मानमन्दिर की साध्वियों की नृत्य आराधना को देखकर पूज्य बापू ने अपने हृदय के उद्गार इस प्रकार व्यक्त किये –

बाबा महाराज जो प्रतिदिन रास नृत्य कराते हैं, उसमें मैं भी उपस्थित था तो देखा कि यहाँ की बेटियाँ दो-ढाई घंटे तक नृत्य करते हुए गोल-गोल घूमती रहीं और यहाँ के बच्चे भी गोलाकार घूमते रहे । मूल में तो ये हमारी (हमारे देश की ) परम्परा है किन्तु कालान्तर में सूफियों ने भी इसे अपनाया । वे भी आँखें बन्दकर घूमते हैं । यहाँ जो देखा कि छोटी-छोटी बालिकायें और बड़ी बेटियाँ – ये सभी दो-ढाई घंटे तक गोलाकार घूमकर नृत्य करते रहे तो उसको देखकर मुझे भी फेर चढ़ गया (चक्कर सा आने लगा ) । यहाँ के बच्चे भी गोलाकार घूमते हुए कीर्तन कर रहे थे । (बापू पूछते हैं ) क्या ऐसा नृत्य प्रतिदिन होता है ? (उनको बताया गया कि ऐसी नृत्य आराधना प्रतिदिन होती है) पूज्य बापूजी ने कहा – साधु-साधु, इन बेटियों को भी साधु-साधु । इतनी उम्र में भी बाबा गाते हैं, स्वर पकड़कर ऊँचे जाते हैं, नीचे आते हैं ( शास्त्रीय संगीत के हिसाब से ऊँचे और नीचे स्वर में गाते हैं) । बाबा को संगीत का गजब का ज्ञान है । हरीश ने मुझे बाबा द्वारा रचित पदों की पुस्तक दी, उसमें नोटेशन के साथ राग लिखे हैं । बाबा की बहुत अधिक रचनाएँ हैं । वे स्वयं भक्तिमय गीत बनाते हैं । बाबा ने मीराजी का पद गाया - तेरो कोई नहिं रोकनहार, मगन ह्वै मीरा चली । बाबा गाते हैं और बड़ी मस्ती के साथ अपने हाथ से कैसियो बजाते हैं । कितने अधिक रागों का आपने संकलन किया है । मैं तो देखता ही रह गया । धन्य है ! बाबा ने कुछ ऐसे रागों का नाम लिया (उन्हें गाया) तो यहाँ के बच्चे खड़े हो गये, नर्तन करने लगे, ये छोटे सन्यासी गोल-गोल घूमते ही रहे, लगातार नृत्य करते रहे ।

नृत्य तीन प्रकार से होता है । स्थूल नृत्य शरीर प्रधान होता है, मध्यम नृत्य मन प्रधान होता है और प्रथम कोटि का नृत्य आत्मा प्रधान होता है । नृत्य में गोल-गोल घूमना सूफी परम्परा है । बाबा के पद गान और नृत्य आराधना के बाद अगला कार्यक्रम होना था – नृत्य नाटिका पर आधारित मान लीला । जब हरीश बाबा महाराज को इसके बारे में बताने गये तो उनका विवेक तो देखो, वे मुस्कुराकर बोले – 'अरे, मुझे इस बारे में पहले क्यों नहीं बताया ? पहले बता देते तो मैं अपना पदगान जल्दी बन्द कर देता ।' इसे कहते हैं साधु का विवेक ।

पूज्य मोरारी बापू की कथा के चौथे दिन वल्लभ सम्प्रदाय के आचार्य गोकुल निवासी परम श्रद्धेय श्री पंकज बाबा भी माताजी गोशाला के कथा मण्डप में पधारे थे । श्रीबाबा महाराज के आदेशानुसार २०१५ के यमुना आन्दोलन के अन्तर्गत बरसाना से दिल्ली तक चली यमुना यात्रा में आचार्य पंकज बाबा ने बहुत बड़ा सहयोग दिया था । उनके कथा मण्डप में पधारने पर कथा के आयोजक परम वैष्णव श्रीहरेश सिंघवी जी ने पूज्य मोरारी बापू जी एवं श्रोताओं के समक्ष श्रद्धेय पंकज बाबा का परिचय इस प्रकार दिया –

पूज्य पंकज बाबा गोकुल में विराजते हैं । वे वल्लभ सम्प्रदाय के सम्मानित आचार्य हैं तथा चिम्मन लाल महाराज जी के सुपुत्र हैं और जब हम लोगों ने परम पूज्य श्रीरमेश बाबा महाराज जी के नेतृत्त्व में यमुनाजी के शुद्धिकरण एवं मुक्तिकरण के लिए सन् २०११, २०१३ और २०१५ में देशव्यापी अभियान चलाया और देश की राजधानी दिल्ली तक यमुना यात्रा भी निकाली, उसमें श्री पंकज बाबा का पूर्ण सहयोग रहा । २०१५ की यमुना यात्रा में ब्रज से दिल्ली तक चली पूरी यमुना यात्रा में पंकज बाबा हम लोगों के साथ पैदल चले थे । एक बात और विशेष है कि श्रीपंकज बाबा और उनके पिताजी श्री चिम्मन लाल महाराज ने ही परम पूज्य श्री बाबा महाराज से मेरा परिचय करवाया था । पंकज बाबा महाराज को मेरा विनम्र प्रणाम और अब उनसे प्रार्थना है कि अपने विचार व्यक्त करने की कृपा करें –

**श्रद्धेय आचार्य श्रीपंकज बाबा –** "व्यास पीठ पर विराजमान परम पूज्य श्रीमोरारी बापू जी को मेरा प्रणाम । परम करुणा, परम वात्सल्य जिनके हृदय में भरा हुआ है । उपस्थित मान मंदिर के सभी सम्माननीय सन्त गण, उपस्थित समस्त आचार्यगण और सभी कथा रसिक श्रोता जन ! पूज्य बापू जी की एक बार मुम्बई में कथा हुई थी, उसके आयोजक हरीश भाई ही थे, तभी मैं वहाँ उपस्थित हुआ था और आज ब्रज में पुनः उनकी कथा में उपस्थित होने का अवसर प्राप्त हुआ है । पूज्य श्री रमेश बाबा महाराज से मेरा परिचय यमुना आन्दोलन के कारण ही हुआ था और हरीश भाई से मेरा परिचय भी यमुना अभियान के कारण हुआ था और उनके द्वारा आपका परिचय (श्री मोरारी बापू जी का) सम्भव हुआ । मेरा जिन सभी पूज्य सन्तों से मिलन का हेतु रहा है, उसका मूल कारण केवल यमुना आन्दोलन ही रहा है । यमुना आन्दोलन के माध्यम से हम लोग एक दूसरे के परिचय में आये, हमारा आपस में और अधिक संवाद बढ़ा, सत्संग बढ़ा । हमारे यहाँ यमुना को कालिन्दी कहा जाता है और कालिन्दी का अर्थ है कि जो कलि को दूर करती हैं । कालिन्दी अर्थात् कलिन्द की पुत्री । भक्तों में भी कभी-कभी आपस में कलि हो जाता है, किसी कारणवश मनमुटाव हो जाता है, उसको यमुनाजी दूर कर देती हैं । कभी-कभी भक्त और भगवान् के बीच में भी मीठा कलह हो जाता है । जैसे यहाँ मान मन्दिर है, यहाँ तो मान की लीला चलती रहती है, अतः कालिन्दी उस मान को भी दूर करती हैं । तीसरा कलि अर्थात् काल का जो प्रवाह है, उसको भी जो समाप्त कर देती हैं, वे हैं कालिन्दी । इस प्रकार त्रिविध रूप से कालिन्दी का वर्णन हुआ है । वे भक्तों का भगवान् से मेल कराती हैं और भक्तों का आपस में भी मेल-मिलाप करवाती हैं । यमुनाजी ने अपना यह स्वरूप मेरे लिए प्रकट किया कि आप सभी सन्तों से उनके हेतु से मेरी मुलाकात हो गयी । श्रीमद्भागवत में उल्लेख है –

**न ह्यम्मयानि तीर्थानि न देवा मृच्छिलामयाः । ते पुनन्त्युरुकालेन दर्शनादेव साधवः ॥** (श्रीभागवतजी १०/८४/११)

जल से भरे हुए तीर्थ, मिट्टी और शिला से बनी हुई मूर्तियाँ – वे बहुत काल बाद पवित्र करती हैं किन्तु साधुओं का दर्शन तत्क्षण ही पवित्र कर देता है । मान मंदिर में आने पर यहाँ मुझे जो प्रेम प्राप्त हुआ, बाबा का जो परम आशीर्वाद मुझे प्राप्त हुआ, उसके कारण मैं अपने आपको कभी मान मन्दिर से अलग महसूस करता ही नहीं हूँ । मान मन्दिर मुझे अपना घर

ही प्रतीत होता है । इसलिए बापूजी ! आपको यहाँ देखकर ऐसा लगता है, जैसे कि आप मेरे ही घर में पधारे हैं । हरीश भाई का भी इस विषय में बहुत बड़ा पुरुषार्थ है । उन्होंने यमुनाजी की सेवा में, गाय की सेवा में बहुत परिश्रम किया है, इस सन्दर्भ में उनकी खूब भावना है । उनके पूरे परिवार की ही यमुनाजी के प्रति गहरी भावना है । अनेक यमुना यात्राओं में उन्होंने अनेक प्रकार से अपनी सेवायें प्रस्तुत की हैं, केवल वित्त से ही नहीं अपितु तन और मन से भी उसी प्रकार सेवा की है । यह उनका बड़ा ही अभिनन्दनीय पक्ष है ।

शास्त्रों में ऐसा कहा गया है कि गायें पृथ्वी को धारण करने का एक मुख्य हेतु है । जो सात मूल तत्त्व पृथ्वी को धारण करते हैं – **गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च सतीभिः सत्यवादिभिः । अलुब्धैर्दानशीलैश्च सप्तभिर्धार्यते मही ॥** शास्त्र में पृथ्वी को धारण करने वाले सात मूल तत्त्वों में गो माता को सबसे प्रमुख बताया गया है । गो, ब्राह्मण, वेद, सती स्त्रियाँ, सत्यवादी लोग, दानशील और निर्लोभी पुरुष – ये पृथ्वी को धारण करने वाले मूल तत्त्व हैं । गाय की रक्षा होगी तो पृथ्वी की रक्षा होगी क्योंकि पृथ्वी भी तो गोरूपा है । असुरों के अत्याचारों से दुखी होकर पृथ्वी गाय का रूप धारण करके ब्रह्माजी की शरण में जाती है । इसलिए पृथ्वी स्वयं गाय रूपा है तो गाय की रक्षा करना पृथ्वी की रक्षा करना है । आज इसी उद्देश्य से इस कथा का यहाँ आयोजन हो रहा है । यह बड़ी ही प्रसन्नता की बात है और सत्संग की प्राप्ति तो जितनी अधिक हो जाए, उतना ही उसका रस ले लेना चाहिए क्योंकि कथा अपने आप में फल है । कथा से कहीं जाना नहीं है । हमारे यहाँ तो यह कहा जाता है कि कथा किसी प्राप्ति के लिए नहीं है । कथा ही परम पुरुषार्थ है । कथा ही अमृत है । यह ठीक बात है कि कथा से भगवान् मिलते हैं पर कथा भी भगवान् ही है, इसलिए कथा मिल गयी तो भगवान् ही मिल गये क्योंकि भगवान् और उनकी कथा में कोई भेद नहीं है । भगवान् का एक स्वरूप विग्रहात्मक (अर्चा विग्रह के रूप में) है और दूसरा स्वरूप नामात्मक है । इन दोनों की भगवत्ता में कोई भेद नहीं है । चाहे राम कथा हो चाहे कृष्ण कथा हो, हमारे यहाँ तो राम और कृष्ण में तत्त्वतः अभेद ही माना गया है । महाप्रभु वल्लभाचार्य जी के दृष्टिकोण से यदि देखें तो उन्होंने रामायण को भी भागवत के समान प्रमाण माना है । महाप्रभु ने अपने शब्दों में कहा है – 'रामायणमनन्तं हि पुराणमिव सम्मतं एक एकैकमक्षरं प्रोक्तं महापातक नाशनम् ।' रामायण का एक-एक अक्षर महापातक का नाश करने वाला है । आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि महाप्रभु जी के तेलगू में लिखे पद भी मिलते हैं । उसमें आपने एक पद रामजी के बारे में तेलगू भाषा में भी बनाया है, उसमें ऊपर लिखा है - 'श्रीरामूलू', जैसे ऊपर भगवान् का नाम लिखते हैं । हमारे यहाँ की जो परम्परायें रही हैं, उनमें तत्त्वतः परब्रह्मतेन राम और कृष्ण में कोई भेद नहीं है, यह मैं आज इस मंच से कह रहा हूँ । लीलाओं में भेद है तो भक्तों को जिस लीला में आसक्ति है, उस रूप में आसक्ति हो जाती है, वह एक अलग बात है । अब जैसे बरसाना में आयेंगे तो यहाँ 'राधे-राधे' ही कहना पड़ेगा, यहाँ तो कृष्ण की भी उतनी नहीं चलेगी । नंदगाँव में जाओगे तो वहाँ कृष्ण-कृष्ण होगा । तत्त्वतः राधामाधव में अभेद है, भाव के भेद के कारण भक्तों में मीठी कलह होती है, वह होनी चाहिए । मीठा कलह होते रहना चाहिए । जो क्लेशकारी कलह है, ईर्ष्या वाला कलह है, वह नहीं होना चाहिए । श्रीराधासुधानिधि में प्रथम श्लोक में कहा गया है –

**यस्याः कदापि वसनाञ्चल खेलनोत्थ धन्यातिधन्य पवनेन कृतार्थमानी ।**
**योगीन्द्र-दुर्गम-गति-र्मधुसूदनोऽपि तस्या नमोऽस्तु वृषभानुभुवो महिम्ने ॥**

श्रीराधाजी, प्यारी जी, स्वामिनी जी बरसाना में खड़ी हैं, उनका वस्त्र हिला, उसकी वायु नन्दगाँव तक भगवान् कृष्ण के पास गयी । योगीन्द्रों के लिए भी दुर्लभ जो भगवान् श्रीकृष्ण हैं, वे उस पवन से अपने को धन्य मानते हैं, कृतार्थ मानते हैं, ऐसे इस वृषभानुजी के पुर (बरसाना) की दिशा को मैं नमस्कार करता हूँ । ऐसा राधावल्लभ सम्प्रदाय के आद्याचार्य श्री हित हरिवंश महाप्रभु ने कहा है । ये भाव की भूमियाँ हैं, यहाँ पर भाव से ही भगवान् की प्राप्ति होती है । आप लोग भाव से ही इस कथा का श्रवण करें और श्रीरमेश बाबा जी महाराज के लिए मैं क्या कहूँ ? मेरे मन में उनके लिए बहुत आदर का, बहुत उच्चता का भाव है क्योंकि मैं तो अपना घर समझकर बार-बार यहाँ आता रहा हूँ । ब्रज की सेवा में उन्होंने

अपने पूर्ण जीवन को समर्पित कर दिया है । ब्रज की जितनी सेवा उन्होंने की है, मुझे नहीं लगता कि उतनी किसी ने की होगी । तन-मन-धन से उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन इसके लिए समर्पित कर दिया है । ऐसे महान संत के सानिध्य में आज हम सब लोग इकठ्ठा हुए हैं, यह हमारा परम सौभाग्य है । मैं क्षमाप्रार्थी भी हूँ कि मैं कथा के विघ्न के रूप में कथा के मध्य में आ गया, बस इतना ही कहकर मैं अपने वक्तव्य को पूर्ण करना चाहूँगा ।

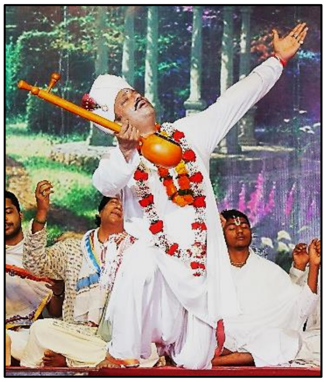

# महाराष्ट्र के महाप्रभु 'श्रीनामदेवजी'

**बाबाश्री द्वारा कथित 'एकादशी-सत्संग' (३/५/२०१२) से संकलित**

नामदेवजी के नाना का नाम था वामदेव । नामदेव की माँ, वामदेव की पुत्री का नाम था 'गौणाई'; इनका बचपन में ही विवाह हो गया किन्तु अल्पायु में ही पतिदेव की मृत्यु हो गयी, ये विधवा हो गयीं तो अपने पिता के घर में ही रहने लगीं । माँ के वैधव्य के पश्चात् नामदेवजी का जन्म हुआ क्योंकि ये भगवान् की भक्त थीं । भक्त जो चाहता है, वह भगवान् को करना पड़ता है । नामदेव की माँ ने भगवान् से प्रार्थना की कि मेरी गोद में एक बालक होना चाहिए, जो भक्त हो और आपकी सेवा करे । भगवान् ने गौणाई की इच्छा को पूरा किया और इनके एक पुत्र का जन्म हुआ । जब विधवा स्त्री के बालक हुआ तो गाँव में इस बात की निन्दा होने लगी कि पति तो है नहीं फिर बालक का जन्म कैसे हो गया ? वामदेवजी ने अपनी पुत्री से पूछा कि बेटी ! ऐसा कैसे हो गया ? सच-सच बता दे कि यह बालक किसका है ? गौणाई ने सच-सच बता दिया कि यह बालक भगवान् का है किन्तु दुनिया तो दुनिया है, वह इस सत्य को कैसे स्वीकार कर सकती है ? लोग तरह-तरह की चर्चा करने लगे । मौका मिल जाता है तो लोग हजार तरह की बातें बनाते हैं । लोग कहने लगे कि हम तो पहले ही कहते थे कि भक्ति में बड़ी पोल रहती है । ये लोग भक्ति करते हैं किन्तु पीछे से गलत काम करते हैं । जब बालक के नामकरण संस्कार का दिन आया तो सारा गाँव एकत्रित हुआ । वामदेवजी ने गौणाई से कहा – 'बेटी ! क्या भगवान् तेरी ओर से गवाही दे सकते हैं ?' गौणाई ने कहा – 'अवश्य ही देंगे क्योंकि मेरा किसी संसारी पुरुष से कोई सम्बन्ध ही नहीं है । मैं तो एक कृष्ण को ही जानती हूँ । उनके आशीर्वाद से ही मेरे पुत्र का जन्म हुआ है तो वे गवाही क्यों नहीं देंगे ?' अपनी पुत्री की बात सुनकर वामदेवजी को भगवान् पर विश्वास हो गया और फिर उन्होंने सारे गाँव वालों के लिए बहुत बड़े भोज का आयोजन किया । सभी को निमन्त्रण दिया गया । बहुत से लोग वामदेवजी के घर आये क्योंकि यह बात सब जगह फ़ैल गयी थी कि आज के दिन भगवान् गवाही देंगे । वामदेवजी ने कहा कि मेरी पुत्री भक्त है और उसका संसार के किसी भी आदमी से कोई सम्बन्ध नहीं है । इसके पुत्र तो भगवान् के आशीर्वाद से हुआ है और भगवान् ने ही इसका नाम नामदेव रखा है । भगवान् ने कहा है कि यह मेरे नाम का बहुत बड़ा प्रेमी भक्त होगा ।

कई गाँव के लोग वामदेवजी के घर के आसपास एकत्रित हुए कि आज भगवान् गवाही देंगे । चलो देखें, कैसे भगवान् गवाही देता है । बड़ी भीड़ आयी । बहुत बड़ी पंगत हुई । पाँच-दस गाँवों के लोग आये । भोजन करने के बाद सभा जुड़ी । लोगों ने वामदेवजी से कहा कि अब तुम अपनी बेटी के पुत्र के सन्दर्भ में भगवान् से गवाही दिलवाओ । वामदेवजी ने सभा में खड़े होकर आवाज लगाई – 'हे गोविन्द ! गोपाल ! ये संसार विश्वास नहीं कर रहा है । मेरी पुत्री गौणाई पर कलंक लग रहा है । आप इसका निर्णय करो ।' वामदेवजी के इतना कहते ही उसी समय आकाशवाणी हुई अर्थात् आकाश से आवाज आई – 'यह संसार समझ नहीं सकता है । वामदेव की पुत्री गौणाई का बालक मेरे आशीर्वाद से हुआ है । मैंने ही इसका नाम नामदेव रखा है ।'

आकाशवाणी सुनकर वहाँ बैठे हजारों लोग शान्त हो गये क्योंकि आसमान से आवाज आ रही है तो उसका विरोध कैसे किया जा सकता है ? कोई दिखाई नहीं दे रहा है । कोई आदमी दिखाई पड़े तो दस-बीस लोग उसका विरोध

करने, उससे लड़ने के लिए जा सकते हैं कि तू झूठ क्यों बोलता है ? लेकिन यहाँ तो प्रत्यक्ष चमत्कार देखकर सब चुप हो गये ।

इस तरह बचपन से ही नामदेव जी की महिमा चारों ओर फैलने लगी । ये बचपन में देखा करते थे कि नानाजी प्रतिदिन ठाकुरजी की सेवा करते हैं तो ये सोचने लगे कि मुझे भी ठाकुरजी की सेवा मिल जाए तो अच्छा होगा । नामदेवजी नाना से कहते थे कि मुझे भी ठाकुरजी को भोग लगाने दो किन्तु नाना मना कर देते थे और कहते कि तू अभी बच्चा है, तू भोग लगाना नहीं जानता है । नामदेवजी कहते कि मैं सब कुछ जानता हूँ । एक दिन की बात है कि ऐसा संयोग बना कि नानाजी को किसी आवश्यक कार्य से चार-पाँच दिन के लिए बाहर जाना पड़ा । उस समय ठाकुरजी की सेवा नामदेव की माँ गौणाई करने लगी किन्तु मासिक धर्म के कारण स्त्रियाँ महीने में तीन दिन तक अशुद्ध रहती हैं । गौणाई का मासिक धर्म का समय आया तो वह रोने लगी कि अब ठाकुरजी का भोग कौन लगाएगा ? नामदेवजी को मौका मिल गया । वे बोले – 'माँ ! मैं भोग लगाऊँगा ।' गौणाई समझ गयी कि यह सब भगवान् की इच्छा से हुआ है और वे मेरे पुत्र को भक्ति देना चाहते हैं । इसकी सेवा लेना चाहते हैं । गौणाई ने नामदेव से पूछा – 'क्या तू भोग लगा देगा ?' नामदेवजी भोजन तो बना नहीं सकते थे, अतः उन्होंने कहा कि मैं दूध का भोग ठाकुरजी को लगा दूँगा । माँ ने कहा – 'तू दूध का भोग लगा देगा ?' नामदेवजी बोले – 'हाँ, लगा दूँगा ।' माँ ने कहा – 'ठीक है । कल सुबह उठकर तू पहले दूध गर्म करना और दूध गर्म करने के बाद जैसे मैं दूध में मीठा मिलाती हूँ, मेवा डालती हूँ, उसी प्रकार तू भी अच्छी प्रकार प्रेम से गोपालजी को भोग लगाना ।' नामदेवजी यह सुनकर बड़े ही प्रसन्न हुए । प्रसन्नता के कारण वे सारी रात सोये नहीं । वे सोचने लगे कि कब सबेरा होगा और कब मैं ठाकुरजी को भोग लगाऊँगा ?

भगवान् की भक्ति की यह विशेषता है कि जब वह आती है तो नींद समाप्त हो जाती है । नामदेवजी सुबह उठे और स्नान आदि करने के बाद उन्होंने पहले दूध गर्म किया और माँ के निर्देशानुसार दूध मीठा करने के लिए उसमें मिसरी डाली, मेवा आदि डाला और फिर वे दूध का कटोरा ठाकुरजी के पास ले गये, उन्हें भोग लगाया । उस समय नामदेवजी छोटे से बालक ही थे । छोटा बालक भोला होता है । नामदेवजी ने गोपालजी के श्रीविग्रह के आगे दूध का कटोरा रख दिया और फिर पर्दा लगा दिया जैसे उनके नाना किया करते थे । बालक स्वभाव के अनुसार पर्दा करने के बाद बीच-बीच में ये झाँककर देखा भी करते थे कि ठाकुरजी दूध पी रहे हैं कि नहीं । उनके नाना प्रतिदिन इसी प्रकार भोग लगाया करते थे । भोग लगाकर पर्दा करके घंटी हिलाया करते थे और इस तरह भोग लग जाता था । नामदेवजी सोचते थे कि ठाकुरजी प्रतिदिन साक्षात् रूप से भोग ग्रहण करते हैं, भोजन करते हैं, दूध पीते हैं । हम लोग तो ठाकुरजी के आगे दूध रख देते हैं, पर्दा करके घंटी हिला देते हैं । ठाकुरजी चाहे दूध पियें चाहे न पियें किन्तु नामदेवजी सोच रहे थे कि ठाकुरजी साक्षात् रूप से दूध पीते हैं, इसलिए पर्दा करने के बाद वे बार-बार झाँकते थे । बहुत देर हो गयी । नामदेवजी ने देखा कि ठाकुरजी ने दूध नहीं पिया । सारा दिन बीत गया । नामदेवजी बार-बार पर्दा करते, बार-बार झाँक कर देखते और प्रार्थना करते – 'महाराज ! दूध पी लो । गोपालजी दूध पी लो । क्या तुम मेरे हाथ से दूध नहीं पियोगे ? मैं अभी नया हूँ, क्या इसीलिए मेरे हाथ से दूध पीने में तुम लज्जा करते हो ? मेरे हाथ से दूध पी लो ।' सारा दिन बीत गया किन्तु गोपालजी ने दूध नहीं पिया । अब नामदेवजी बोले – 'गोपाल ! तू दूध नहीं पियेगा तो मैं भी नहीं पिऊँगा । मैं भी भूखा मरूँगा । मेरी बात मान जा । दूध पी ले ।' गोपाल जी ने दूध नहीं पिया, फिर से पूरा दिन बीत गया । नामदेवजी ने उस दूध को रख दिया और सोचने लगे कि जब गोपालजी ने इस दूध को नहीं पिया तो मैं इसे कैसे पी सकता हूँ ? दूसरा दिन आया, उस दिन भी नामदेवजी ने दूध को गरम किया, उसमें मीठा मिलाया, मेवा डाला और ठाकुरजी के आगे भोग रख दिया, पर्दा कर दिया और भगवान् से बोले – 'गोपालजी ! आज दूध पी लेना । आज शर्म मत करना । मैं अभी नया बच्चा हूँ, इसलिए तुम मुझसे लज्जा करते हो ।' आज भी सारा दिन बीत गया किन्तु गोपालजी ने दूध नहीं पिया । वैसे भी गोपालजी प्रतिदिन दूध नहीं पीते थे, उनका तो भाव भोग लगता था । जब गोपालजी ने दूध नहीं पिया तो नामदेवजी ने भी दूध नहीं

पिया । जबकि वह बहुत छोटे से बालक थे । उन्होंने दूध को रख दिया । उनकी माँ ने कहा – 'बेटा ! दूध पी ले ।' नामदेवजी बोले – 'माँ ! जब तक गोपालजी नहीं पियेंगे तब तक मैं भी दूध नहीं पिऊँगा ।'

तीसरे दिन भी सुबह नामदेवजी उठे, दूध को गरम किया और ठाकुरजी को भोग लगाया, पर्दा किया । सारे दिन ऐसे ही करते रहे । भोग रखकर परदे के भीतर झाँकते रहे और गोपालजी से कहते रहे कि गोपालजी ! तुमने अभी तक दूध क्यों नहीं पिया ? तीन दिन तीन रात बीत गयी, गोपालजी ने दूध नहीं पिया तो नामदेवजी ने भी दूध नहीं पिया । छोटे से बालक ने दूध तो क्या, पानी भी नहीं पिया । अब चौथे दिन नानाजी को वापस आना था तो उस दिन नामदेवजी सुबह उठे और उन्होंने दूध को गरम किया, ठाकुरजी के आगे भोग रखा । वे तीन दिन से भूखे-प्यासे थे । इस बार उन्होंने ठाकुरजी के आगे दूध रखा और हाथ जोड़कर रोने लगे तथा बोले – 'गोपालजी ! आज तुम दूध पी लेना । मेरे नानाजी आयेंगे तो वे क्या कहेंगे ? वे मुझसे कहेंगे कि तूने गोपालजी को दूध नहीं पिलाया । अब तुम्हारे दूध न पीने से मेरी तो बेइज्जती हो जायेगी । इसलिए आज तुम मेरी इज्जत रख लो और दूध पी लो ।' नामदेवजी ने पर्दा कर दिया और जब झाँककर देखा तो दूध तो वैसा का वैसा ही रखा था । अन्त में नामदेवजी खीझ गये और बोले – 'गोपालजी ! या तो तुम दूध पी लो, कल नानाजी आ जायेंगे । वे मुझसे कहेंगे कि तूने ठाकुरजी को दूध नहीं पिलाया तो मैं क्या जवाब दूँगा ? मैं तो मर जाऊँगा, तुम्हें दूध पीना पड़ेगा ।' बालक नामदेव ने एक तेज धार की छुरी ली, उसे लेकर ठाकुरजी के पास गये और उनसे बोले – 'अरे गोपाल ! अब अन्तिम निर्णय है कि या तो तुम दूध पियो, नहीं तो मैं मरूँगा ।' ऐसा कहकर नामदेवजी ने पैनी धार वाली छुरी उठाई और जैसे ही अपनी गर्दन को काटने के लिए तैयार हुए, उसी समय मूर्ति में से साक्षात् गोपालजी प्रकट हो गये और बोले – 'अरे नामदेव ! ये क्या करता है ? मरता क्यों है ?' नामदेवजी – 'मरूँ न तो और क्या करूँ ? तुम मेरे हाथ से दूध ही नहीं पीते हो तो मैं क्या करूँ ? अब दूध पियो, नहीं तो मैं मरूँगा ।' ठाकुरजी – 'अच्छा तो मैं दूध पी लूँगा । रुक जा, रुक जा ।' ऐसा कहकर ठाकुरजी ने दूध का कटोरा उठाया और दूध पीने लगे । जब वे आधा से अधिक दूध पी चुके तो बालक नामदेव बोले – 'महाराज ! कुछ दूध प्रसाद मेरे लिए भी छोड़ देना क्योंकि मैं भी तीन दिन से भूखा हूँ । मेरा ध्यान रखना । सारा दूध मत पी जाना । अब दूध पीने लगे तो तुम सारा ही दूध पीने लगे ।' बालक की बात सुनकर गोपालजी हँसने लगे । उन्होंने थोड़ा सा दूध नामदेव के लिए भी छोड़ दिया और बोले – 'अच्छा भाई ! तू भी दूध पी ले ।' नामदेवजी बड़े प्रसन्न हुए कि आज गोपालजी ने दूध पी लिया । चौथे दिन नानाजी आये और उन्होंने कहा – 'नामदेव ! तूने गोपाल जी को भोग लगाया था ?' नामदेव बोले – 'नाना ! मैंने भोग तो रखा लेकिन तुम्हारा यह गोपाल बड़ा ही शर्मीला है । मैं नया था, इसलिए जब मैंने भोग रखा तो इन्होंने मेरे हाथ से तीन दिनों तक दूध नहीं पिया ।' नाना ने पूछा – 'फिर क्या हुआ ?' नामदेव बोले – 'तीन दिन-तीन रात के बाद इन्होंने चौथे दिन दूध पिया है । मैंने अपनी आँखों से देखा । जब पीने लगे तो ये सारा दूध पी रहे थे तो मैंने इनसे कहा कि थोड़ा प्रसाद मेरे लिए भी छोड़ दो । सारा दूध मत पियो । तब इन्होंने थोड़ा दूध मेरे लिए भी छोड़ दिया, फिर मैंने भी उस दूध प्रसाद को पिया ।' नानाजी को बालक नामदेव की बात पर विश्वास नहीं हुआ । वे तो ऐसा ही समझते थे कि ठाकुरजी के आगे भोग रखकर पर्दा कर दो और फिर पर्दा हटा लो । ठाकुरजी उस भोग को स्वीकार कर लेते हैं । नाना ने नामदेव से पूछा कि क्या तू मेरे सामने ठाकुरजी को भोग लगा सकता है, उन्हें दूध पिला सकता है ? नामदेव बोले – ' हाँ ! उन्हें दूध पिला दूँगा ।' नामदेवजी को विश्वास हो गया था कि अब ठाकुरजी को मेरे हाथ से दूध पीना पड़ेगा । यदि वे नहीं पियेंगे तो मैं छुरी उठाउँगा और फिर वे तुरन्त प्रकट होकर दूध पी लेंगे । मैंने उनकी आदत जान ली है । पाँचवें दिन नामदेव ने नाना के सामने ठाकुरजी को दूध का भोग रखा । पर्दा कर दिया और ठाकुरजी से बोले – 'गोपालजी ! दूध पी लो ।' गोपालजी ने दूध नहीं पिया । नामदेवजी परदे के भीतर बार-बार झाँकते किन्तु ठाकुरजी दूध नहीं पीते । नामदेवजी ने कहा – 'अरे, तुम्हारी तो आदत पड़ गयी है । तुम ऐसे नहीं पियोगे ।' नाना ने कहा – 'मैं तो पहले ही कह रहा था कि ठाकुरजी तेरे

हाथ से दूध नहीं पियेंगे । तुझे धोखा हो गया था ।' नामदेवजी बोले – 'नहीं, मैं समझ गया उनकी आदत ।' इतने में नामदेवजी गये और भीतर से छुरी निकालकर लाये और ठाकुरजी के सामने बैठ गये तथा उनसे बोले - 'महाराज ! जल्दी से दूध पिओ, नहीं तो मैं छुरी से अपनी गर्दन काट लूँगा ।' ऐसा कहकर जैसे ही वे छुरी से अपनी गर्दन काटने चले, उसी समय मूर्ति से ठाकुरजी प्रकट हो गये । इस बार नानाजी को भी उनका दर्शन हुआ । ठाकुरजी कटोरा उठाकर दूध पीने लगे और थोड़ा सा दूध नामदेव के लिए छोड़ दिया क्योंकि उनको पता था कि नहीं छोड़ेंगे तो यह बालक फिर मुझे टोकेगा । जब ठाकुरजी ने नानाजी के सामने ही दूध पी लिया तो यह चमत्कार देखकर उन्होंने नामदेव से कहा – 'बेटा ! अब तू ही ठाकुरजी की सेवा किया कर । मेरी सामर्थ्य नहीं है ।'

यह बात चारों ओर फ़ैल गयी कि बालक नामदेव ने अपने हाथ से ठाकुरजी को दूध पिलाया और ठाकुरजी को दूध पीना पड़ा । उस समय भारत में मुसलमानों का शासन था । उन तक भी यह बात फ़ैल गयी । हिन्दू-मुसलमान सब जान गये । मुसलमान भी जान गये कि बालक नामदेव के हाथों से मालिक (अल्लाह) भी दूध पीता है । मुस्लिम शासक सुल्तान ने कहा कि यदि नामदेव मुसलमान बन जाए तो बहुत से हिन्दू मुसलमान बन जायेंगे । सुल्तान के दरबारियों ने कहा – 'जी हुजूर ! नामदेव का हिन्दू समाज में बहुत सम्मान है ।' सुल्तान ने अपने सैनिकों को आदेश दिया कि नामदेव को बुलाकर मेरे दरबार में लाओ । नामदेवजी को सुल्तान के दरबार में लाया गया । इस बात की चर्चा सिक्खों के धार्मिक ग्रन्थ 'गुरु ग्रन्थ साहब' में भी की गयी है । बादशाह ने नामदेवजी को बुलवाया तो वे दिल्ली पहुँचे । उस दुष्ट मुस्लिम बादशाह ने एक गाय मँगवाकर कसाई के द्वारा उसका सिर कटवा दिया । जब नामदेवजी दरबार में पहुँचे तो बादशाह ने उनसे कहा – 'नामदेव ! यदि तेरे गोपालजी में ताकत है तो इस गाय को जिन्दा कर, नहीं तो मुसलमान बन जा ।'

गुरु ग्रन्थ साहब में लिखा है – "सुल्तान पूछे सुन बे नामा देखहुँ राम तुम्हारे कामा । नामा सुल्ताने बाधिला देखहुँ तेरा हरि बिठूला । बिस्मिल गऊ देऊ जिवाय नातरु गर्दन मारऊँ ठांय ।" सुल्तान बोला – नामदेव ! इस कटी हुई गाय को जीवित कर दो । "बादशाह ऐसी क्यों होई बिस्मिल आनि जीवै कोई ।" बादशाह ने कहा कि क्या मरी हुई गाय जीवित हो सकती है ? नामदेवजी ने कहा – **"मेरा किया कछु न होय, करिहै राम होइहै सो होय ।"** राम जो करेगा, वही होगा ।

नामदेव की माँ गौणाई रोने लगी । वह जानती थी कि इस सुल्तान ने हजारों हिन्दू, जो मुसलमान नहीं बने, उनको मरवा दिया है । यह मेरे पुत्र को भी मरवा देगा । उसने अपने पुत्र नामदेव से कहा – "रुदन करै नामे की माय छोड़ राम की न भजै खुदाय ।" बेटा ! राम को छोड़ दे और 'खुदा-खुदा', 'अल्लाह-अल्लाह' कहने लग जा, नहीं तो तू मारा जायेगा ।

वह स्त्री थी, इसलिए बेचारी डर गयी । **"हउ तेरा पुंगडा न तू मेरी माय, पिंडु परै तो हरि गुन गाय ।"** नामदेवजी ने अपनी माँ से कहा – मैं तेरा बेटा नहीं हूँ । तू मेरी माँ नहीं है । भगवान् का गुण गाने में तू डरती है ।

सुल्तान ने कहा – पागल हाथी को लाओ और उसके द्वारा नामदेव को मरवा दो । **"करै गजिन्द सुन्ड की चोट, नामा उबरै हरि की ओट ।"** पागल खूनी हाथी लाया गया । उसने नामदेवजी पर अपनी सूँड के द्वारा प्रहार किया । बीच में भगवान् आ गये और हाथी पीछे चला गया ।

**"काजी मुल्ला करै सलाम, इन हिन्दुन ने राम लिया मान ।"**

वहाँ बड़े-बड़े मुसलमान मुल्ला-काजी आदि बैठे थे । ग्रन्थ साहब के अनुसार वहाँ उनकी बहुत बड़ी सभा जुड़ी थी । उन्होंने नामदेवजी के बारे में कहा कि यह हिन्दू सच्चा है, इसने राम को मान लिया है और राम ने इसको मान लिया है ।

"बादशाह विनती सुने हो, नामे भर-भर सोना लेहो ।"

मुल्ला लोग बोले – बादशाह ! हमारी विनती मानो । नामदेव को सोना-आभूषण आदि इनाम में दो ।

**मान लेओ तऊ दोजख पड़ौ, दीन शोर दुनिया को भरौ । पावो बेड़ी हाथो ताल, नाम गावै गुन गोपाल ।**

इतने में नामदेवजी ने गोपालजी का गुणगान गाना आरम्भ किया – 'जय गोपाल-जय गोपाल' । गुणगान करते हुए वे नाचने लगे । "गंग जमुन तऊ उलटी बहे, तऊ नामा हरि करता रहे ।" नामदेवजी ने कहा – गंगा-यमुना की धार भले ही उलटी हो जाए किन्तु नामदेव भगवान् का कीर्तन करना नहीं छोड़ेगा । "सात घड़ी जब बीती सुनी" नामदेवजी सात घड़ी तक कीर्तन करते रहे और भगवान् से प्रार्थना करते रहे कि इस मरी गाय को जीवित कर दो । गाय का सिर अलग था और धड़ अलग था । "अजहू न जाइयो त्रिभुवन धनी" नामदेवजी ने कहा – हे त्रिभुवन के धनी गोपालजी ! सात घड़ी (कई घंटे) बीत गये । "तारवन्तण बाज बजाइला, आकाश में बाजे बजने लगे ।" "गरुड चढ़े गोविन्द आइला" सबने देखा कि भगवान् गोविन्द गरुड पर चढ़कर आये हैं । "अपने भगत पर की प्रतिपाल, गरुड चढ़े आये गोपाल ।" यह घटना गुरु नानकदेव के समय की है । "कर हित घरणि की कोड़ि करऊ, कहई तले करि ऊपर धरऊ ।" "कहई तुमू गऊ देहु जिवाय, सबहु गोई देखे पतियाय ।" सब लोग देखेंगे और विश्वास करेंगे । "नामदेव ने प्रणवये सेलमसेह" गाय जीवित हो गयी । "गऊ दुहाई बछड़ा मेलि" बादशाह ने कहा – ऐसे नहीं मानूँगा । ये गाय जीवित हो गयी है अथवा कोई जादू है, इसका दूध निकालो । "दुगई दूहि जब मटकी भरी, लै बादशाह के आगे धरी ।" दूध दुहने वालों ने गाय का दूध दुहकर मटकी भर दी और बादशाह के सामने ले जाकर रख दी । "बादशाह महल महि जाय, अघट घट की घट लागी आय ।" "काजी मुल्ला बिनती फुरमई, बरबसहि हिन्दू मैं तेरी गाय ।" काजी-मुल्लाओं ने कहा – बादशाह ! अब तुम्हारा बचना मुश्किल है । नामदेव सच्चा हिन्दू है । गाय के जीवित होने का चमत्कार देखकर सभी लोग नामदेवजी के चरणों में जाकर गिरे और कहने लगे कि हम तो आपकी गाय हैं । हम पर दया कीजिये । "नामा कहे सुनो बादशाह, ई कुछ पतिया मोहि दिखाय ।" नामदेव ने कहा – बादशाह ! मुझे कुछ विश्वास दिखाओ । "इस पतिया का इहै परवान, साँच सील चालौ सुलतान ।" हे सुल्तान ! तू सच्चे रास्ते पर चल । हिन्दुओं को कटवाना छोड़ दे । यदि ऐसे सन्त नहीं हुए होते तो आज भारत में एक भी हिन्दू न होता । "अऊ अबकी बार न जीवै गाय, तो नामदेव का पतिया जाय । नामे की कीरति रही संसारी, भगत जनादेव घरिया पारी ।" बादशाह ने नामदेव जी को एक मणियों से बना पलंग भेंट में दिया । नामदेवजी ने पलंग ले लिया किन्तु उनके लिए तो मणि-सोना आदि बेकार की चीजें थीं । वे दरबार से चले तो बादशाह ने कहा कि फ़ौज ले जाओ, नहीं तो डाकू मणि का पलंग छीन लेंगे । बादशाह के आदेश से बहुत से सिपाही नामदेवजी के साथ चले । रास्ते में यमुना नदी पड़ी । नामदेवजी ने मणि का पलंग लेकर यमुनाजी में फेंक दिया । सिपाही लोग यह सब देख रहे थे । उन्होंने नामदेवजी से कहा कि यह तो आपने बहुत गलत काम किया । बादशाह का दिया हुआ मणि का पलंग नदी में फेंक दिया । सिपाहियों ने बादशाह के पास जाकर नामदेवजी की शिकायत की । उन्होंने कहा कि आपने तो नामदेव को मणिमय पलंग दिया और उसने पलंग को नदी में फेंक दिया । बादशाह ने कहा कि अब दी हुई चीज मैं उससे कैसे माँग सकता हूँ ? सिपाहियों ने कहा कि माँगिये नहीं, ऐसा कह दीजिये कि मुझे दूसरा पलंग बनवाना है, इसलिए उसी पलंग का नमूना मुझे दिखा दो । सिपाहियों की बात सुनकर बादशाह नामदेवजी के पास गया और बोला – 'नामदेवजी ! मुझे वह मणि का पलंग दिखा दो क्योंकि मुझे ऐसा ही एक दूसरा पलंग बनवाना है ।' नामदेवजी सब समझ गये । उन्होंने कहा – 'ठीक है ।' वे यमुना नदी में घुसे और एक-दो नहीं बल्कि अगणित मणिमय पलंग यमुनाजी के भीतर से निकालने लगे । उन्होंने बादशाह से कहा – 'इन पलंगों को अच्छी तरह देखकर अपना पलंग पहचान ले कौन सा है ?' बादशाह नामदेवजी के चरणों में पड़ा और क्षमा माँगने लगा । नामदेवजी ने कहा – 'क्षमा ही है किन्तु अब किसी हिन्दू को मत सताना ।'

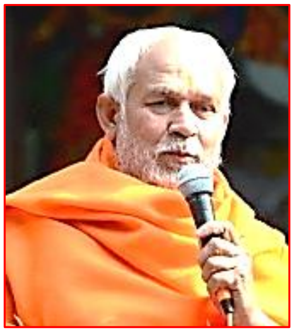

# श्रीब्रज-संरक्षक 'बाबाश्री'

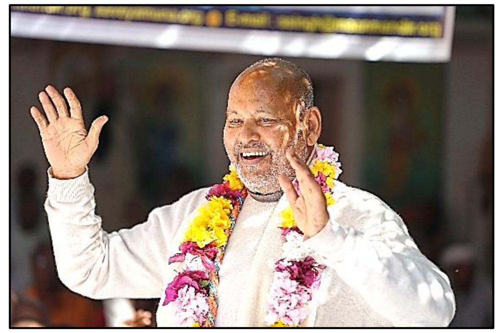

**बाबाश्री के बारे में श्रीराधाकान्त भैयाजी के संक्षिप्त भावोद्गार**

प्रश्न – ब्रज के पर्वतों की रक्षा के आन्दोलन के बारे में भी संक्षेप में कुछ प्रकाश डालें ।

भइयाजी - सन् २००० के आसपास पहाड़ों के खनन से सम्बन्धित संघर्ष ने इतना विकराल रूप धारण कर लिया था कि ऐसा प्रतीत होता था कि हम सुरक्षित नहीं रह पायेंगे । कई बार हम लोगों के ऊपर प्राणघातक हमलों का प्रयास किया गया । ब्रज के पर्वतों की रक्षा हेतु बहुत अधिक संघर्ष किया गया । ब्रज में स्थान-स्थान पर आन्दोलन किये गये, आमरण अनशन किये गये, धरना दिया गया । सहज में ही ब्रज के पर्वतों की रक्षा नहीं हो सकी है । पर्वतों की रक्षा के आन्दोलन की गाथा बहुत विस्तृत है । पर्वतों के आन्दोलन के सन्दर्भ में बाबा महाराज ने हम लोगों को दिल्ली में भी धरना देने के लिए भेजा था । सन् २००८ में हम लोगों ने दिल्ली के जन्तर-मन्तर पर मान मन्दिर के साधुओं और ब्रजवासियों को लेकर दो महीने तक आन्दोलन किया था । उस समय राजस्थान में श्रीमती वसुन्धरा राजे की सरकार थी । २००६ में कामा के निकट स्थित ग्राम बोलखेड़ा में पर्वत के ऊपर जैन मन्दिर पर पहाड़ों के संरक्षण के सम्बन्ध में २५ से अधिक साधु-सन्तों को लेकर आमरण अनशन और धरना प्रदर्शन किया गया । गाँव के ब्रजवासियों के द्वारा पाइप लाइन तोड़ दी गयी थी, कामा का पानी बन्द कर दिया गया । पूरा गाँव हम लोगों के साथ था । दो साधुओं ने एक सप्ताह से अधिक समय तक आमरण अनशन किया था, जल तक नहीं पिया, उनकी हालत गम्भीर हो गयी तो सरकार में हड़कम्प मच गया और इन साधुओं को अनशन से हटाने और हमारे धरने को असफल करने के लिए प्रशासन ने आधी रात को बोलखेड़ा ग्राम में भारी पुलिस दल को भेजा । पुलिस की बहुत सी गाड़ियाँ और वज्रवाहन आदि पर्वत पर स्थित जैन मन्दिर पर आधी रात को पहुँचे । गाँव वालों को जैसे ही इसकी सूचना मिली, सारे ग्रामवासी स्त्री-पुरुष आधी रात को मन्दिर पर एकत्रित हो गये और पुलिस वालों पर बहुत अधिक नाराज हो गये । ग्रामीणों के भयंकर रोष को देखकर पुलिस वाले भी घबरा गये और बोले कि हम लोग इन साधुओं को यहाँ से हटाने नहीं बल्कि इनकी सुरक्षा की दृष्टि से यहाँ आये हैं । रात भर ग्रामीणों के मन्दिर में जुटे रहने से पुलिस कुछ नहीं कर पायी परन्तु सुबह होने पर ग्रामीणों ने सोचा कि अब ये पुलिस वाले कुछ गलत कार्य नहीं करेंगे, अतः वे पर्वत के नीचे स्थित अपने गाँव में लौट गये । जब पुलिस ने देखा कि सभी ग्रामीण अपने घरों में चले गये हैं और सबेरा हो चुका है, तभी सबसे पहले तो वे आमरण अनशन करने वाले दो साधुओं को वहाँ से हटाकर एक अलग वाहन से अपने साथ ले गये और फलों का रस पिलाकर उनका अनशन तुड़वा दिया । इसके बाद उन्होंने बाकी पच्चीस से अधिक साधुओं को जबरन पकड़कर अपने वाहनों में बैठाया और उन्हें भरतपुर जिलाधिकारी कार्यालय में ले गये । जब पुलिस साधुओं को पर्वत और गाँव के बीच के रास्ते से वाहनों पर ले जा रही थी, उसी समय ग्रामीण स्त्री-पुरुष नाराज होकर पुलिस के वाहनों के सामने आ गये और उन पर जोरदार पथराव करने लगे । गाँव की स्त्रियाँ पुलिस की गाड़ियों के आगे लेट गयीं कि हम लोग साधुओं को तुम्हारे साथ नहीं जाने देंगी । बोलखेड़ा ग्राम के ब्रजवासियों ने भारी पुलिस फ़ोर्स के विरुद्ध डटकर मुकाबला किया । उन पर इतने पत्थर बरसाए कि भारी पुलिस दल को उनके बीच से अपने वाहनों द्वारा साधुओं को ले जाना बहुत भारी पड़ गया । बड़ी ही कठिनाई से वे सन्तों को गाँव से निकालकर अपने साथ ले जाने में समर्थ हुए । आन्दोलनकारी ग्रामवासियों ने पाइप लाइन काट दी और तेरह दिनों तक उन्होंने प्रशासन से पानी नहीं लिया । उन्हीं दिनों हम एक गाड़ी के द्वारा बोलखेड़ा गाँव से आ रहे थे । गाड़ी में हम तीन-चार लोग थे । उसमें एक पूर्व महिला डी.जी.पी. भी थीं । रास्ते में हमारी गाड़ी को खनन माफियाओं द्वारा भेजे गये बदमाशों ने घेर लिया और सारे रास्ते वे गाड़ी पर गोलियाँ बरसाते रहे । २२ किमी. तक ड्राइवर ने गाड़ी दौड़ाई और बदमाश लोग बन्दूक से गोली चलाते हुए हमारा पीछा करते रहे । बदमाशों ने गाड़ी को

इस तरह से घेर लिया था कि ड्राइवर ने गाड़ी को धक्का मारकर जगह निकालकर बड़ी कठिनाई से उसे आगे बढ़ाया। उस समय बाबा महाराज के आश्रय से हमारे अन्दर इतना जोश था कि मरना-मिटना तो बहुत आसान लगता था। उस दिन इतने आतंक के बावजूद भी हम लोग रात को बारह बजे कामवन के पुलिस थाने में उन बदमाशों के विरुद्ध रिपोर्ट लिखवाने गये और रिपोर्ट लिखवाने के बाद सभी हमलावर बदमाशों को गिरफ्तार करवाया। जब मैं कामवन के गाँव में अध्यापन के लिए जाता था तो खनन माफियाओं की ओर से इतना आतंक फैलाया गया था कि मुझे अपने पास सुरक्षा की दृष्टि से हर समय रिवाल्वर भी रखनी पड़ती थी और एक मास्टर हर समय मेरे साथ विद्यालय तक जाता था। इन्हीं सब विषम परिस्थितियों के कारण श्रीबाबा महाराज ने मुझसे कहा कि तुम कामवन में अध्यापन की नौकरी छोड़ दो। मैंने विचार किया कि बाबा की इस आज्ञा में भी मेरा हर तरह से मंगल ही है। हालाँकि उस नौकरी को छोड़ने पर मुझे आर्थिक रूप से बड़ी हानि हुई परन्तु बाबा की और मेरी दृष्टि में अर्थ की कोई महत्ता ही नहीं थी। मुझे तो बाबा महाराज की आज्ञा का पालन करना था। मान मन्दिर में पहले जो चालीस बालकों का संगठन था, उन सबका भी यही सर्वोपरि लक्ष्य था – गुरु कहे सोई करना, चाहे पड़े नरक में पड़ना। बाबा कहें कि कुएँ में कूद जाओ तो कुएँ में कूद जाएँ – यही जीवन का ध्येय था। चालीस बालकों में कोई भी ऐसा नहीं था, जो बाबा की आज्ञा का तनिक भी उल्लंघन कर सके। सभी बालक पूर्णरूपेण बाबा महाराज के प्रति समर्पित थे।

पहाड़ों के आन्दोलन के दौरान ही एक बार खनन माफियाओं के भेजे हुए बदमाश मेरे छोटे भाई सुन्दर का अपहरण करके ले गये थे। वस्तुतः आये तो वे थे मेरा अपहरण करने और उन्होंने चार बार इसका प्रयास किया था। उस समय मैं रात्रि को गाँव से आता था और उन्हें पता था कि इस समय इनका बाहर निकलने का समय है परन्तु जब दैव पक्ष में होता है तो संसार की बड़ी से बड़ी शक्ति भी कुछ नहीं कर सकती है। मैं चार बार रास्ता बदलकर गाँव से मन्दिर तक आता था। इस रास्ता बदलने के कारण चार बार उनका मेरे साथ आमना-सामना नहीं हो सका। जब ये बदमाश गिरफ्तार किये गये तो यह बात उन्होंने अपने मुख से बताई थी। उन्होंने मुझे बताया कि हम लोगों ने आपको पकड़ने का चार बार प्रयास किया किन्तु हम आपको नहीं पकड़ सके। चार बार हम आये और जब आप नहीं मिले तो हमने आपके भाई का अपहरण कर लिया। जब वे लोग सुन्दर का हरण करके ले गये तो १८ दिनों तक उसे भूसे की बुर्जी में रखा था और खाने के लिए केवल बाजरे की एक रोटी दोपहर व एक रोटी रात को देते थे। उन्होंने मेरे पास पत्र लिखकर भेजा था कि इतने लाख रुपये हमारे पास भेजो तब तुम्हारे भाई को हम छोड़ देंगे, नहीं तो उसे जान से मार देंगे परन्तु मैंने तो यही दृढ़निश्चय कर रखा था कि बाबा महाराज की इच्छा के विरुद्ध कुछ नहीं हो सकता। बाबा महाराज ने मुझसे कह दिया था कि तुम निश्चिन्त रहो, तुम्हारा भाई सकुशल वापस आ जायेगा। १८ दिनों के बाद पता चल गया था कि अपहरण करके किस गाँव में मेरे भाई सुन्दर को रखा गया है और धीरे-धीरे यह भी पता चल गया कि अपहरणकर्त्ता कौन थे ? संयोगवश मैं वहीं नौकरी करता था। वहाँ उनमें से एक अपराधी आ गया। लकड़ी चीरने वाले उस गाँव के मुसलमानों ने मुझे सूचना दे दी, मैंने तुरन्त पुलिस को सूचित करके वहाँ भेज दिया। पुलिस ने उस बदमाश को गिरफ्तार कर लिया। जब वह गिरफ्तार हुआ तो उसने अपने अन्य साथी बदमाशों के बारे में भी बता दिया और इस तरह सभी अपहरणकर्त्ता बदमाश गिरफ्तार कर लिए गये। जिस दिन सुन्दर का अपहरण हुआ था, उसी दिन बाबा महाराज के आज्ञानुसार हमारे घर में अखण्ड कीर्तन प्रारम्भ हो गया था, उसी कीर्तन के प्रभाव से बदमाशों के चंगुल से छूटकर सुन्दर १८ दिनों के बाद सकुशल घर वापस आ गया।

पहाड़ों के ही संघर्ष के सन्दर्भ में खनन माफियाओं द्वारा भेजे गये हमलावरों ने मेरे भाई अम्बरीष की गोली मारकर हत्या करने का प्रयत्न किया था। बाबा महाराज की कृपा से वह जीवित बच गया परन्तु गोली लगने के कारण उसकी एक आँख पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गयी थी।

प्रश्न – ब्रजयात्रा का क्रम कैसे प्रारम्भ हुआ ? अकस्मात् इसका विचार बाबा महाराज के मन में कैसे आ गया ?

भइयाजी – मान मन्दिर से ब्रजयात्रा का प्रारम्भ सन् १९८८ से हुआ । बाबा महाराज ने विचार किया कि अनेकों ब्रजवासी और गरीब लोग धन के अभाव में ब्रज चौरासी कोस की यात्रा ही नहीं कर पाते हैं । अधिकतर लोग पैसा लेकर ब्रजयात्रा कराते हैं और इस तरह अधिकांशतया पैसे वाले धनाढ्य लोग ही प्रायः ब्रजयात्रा करते हैं । बाबा को बहुत दुःख हुआ कि अर्थ के अभाव में साधारण व्यक्ति ब्रजयात्रा ही नहीं कर पाता है । इधर, राजस्थान के सन्त नित्यानन्द महाराज जी भी बाबा महाराज से १९८८ के पूर्व ही जुड़ गये थे । उन्होंने भी बाबा महाराज से ब्रज चौरासी कोस की यात्रा कराने की प्रार्थना की थी । इस तरह १९८८ से प्रथम बार मान मन्दिर से ब्रज चौरासी कोस की यात्रा का श्रीगणेश हुआ । उस यात्रा में नित्यानन्दजी के भक्तों की टीम और कामवन के ब्रजवासियों के सहयोग से भोजन का प्रबन्ध किया गया और इस तरह निःशुल्क ब्रजयात्रा बाबा महाराज के नेतृत्त्व में चली । प्रथम ब्रजयात्रा के लिए बहताना ग्राम के रघुवीर भगतजी ने अपना खेत गिरवी रख दिया था, उसके माध्यम से ११ मन सत्तू खरीदा गया और इस तरह सत्तू का आहार करके प्रथम ब्रजयात्रा आगे बढ़ी थी । आगे चलकर तो फिर ब्रजयात्रा का प्रबन्ध श्रीजी की कृपा से होने लगा ।

प्रश्न – मान मन्दिर की ब्रजयात्रा को लेकर आपके क्या संस्मरण हैं ?

भइयाजी – प्रथम बार की यात्रा २०० भक्तों के साथ शुरू हुई थी । उस समय भी यात्रा का प्रबन्ध हो गया और वर्तमान में २० हजार ब्रजयात्रियों का भी सहज में प्रबंधन हो जाता है । एक महापुरुष की संकल्प शक्ति को किस प्रकार भगवान् पूरा करते हैं, मैंने मान मन्दिर की राधारानी ब्रजयात्रा के माध्यम से अब तक यह प्रत्यक्ष चमत्कार देखा है । अब तक छोटे से लेकर बड़े से बड़े श्रीबाबा महाराज के द्वारा आरम्भ किये गये सभी कार्य सफलतापूर्वक सम्पादित हुए ।

प्रश्न – उस समय मान मन्दिर में अर्थ का तो पूर्णतया अभाव था और फिर भी ब्रज में ब्रहत् स्तर पर कुण्डों का जीर्णोद्धार किस प्रकार हुआ ?

भइयाजी – यही तो चमत्कार की बात है कि धन का पूर्णतया अभाव होते हुए भी जिन कुण्डों के करोड़ों रुपये के प्रोजेक्ट थे, उन सबके जीर्णोद्धार का कार्य भी श्रीबाबा के द्वारा सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ । ठाकुरजी ही सब व्यवस्था करते थे । कोसी की गोमती गंगा के जीर्णोद्धार में कोसी के ब्रजवासियों ने बहुत सहयोग किया, साधु-सन्त भी जुड़े, इस तरह मूल रूप से श्रीबाबा महाराज की दृढ़ इच्छा शक्ति और श्रीराधारानी की महती कृपा से ब्रज के अनेकों सरोवरों के शोधन और पुनर्निर्माण के कार्य होते चले गये । गोमती गंगा के कारण कोसी में ऐसी जनजागृति हुई कि वहाँ १३ प्रभात फेरियाँ चलने लगीं । इसी प्रकार बाबा महाराज की प्रेरणा से ब्रज के हजारों गाँवों में प्रभात फेरियों का शुभारम्भ किया गया । ब्रज में एक भी गाँव ऐसा नहीं बचा, जहाँ प्रभात फेरी न चलती हो । कभी-कभी परिस्थितिवश कुछ गाँवों में प्रभात फेरी बन्द भी हो जाती हैं परन्तु बाबा महाराज की प्रेरणा से मान मन्दिर की प्रचार टीम के द्वारा पुनः उन बन्द हो चुकी प्रभात फेरियों का प्रारम्भ किया जाता है ।

प्रश्न – क्या श्रीबाबा महाराज ब्रज के लुप्त हो चुके प्राचीन लीला स्थलों की खोज भी किया करते थे ?

भइयाजी – हाँ, श्रीबाबा महाराज के मन में यह भी उत्कट अभिलाषा रहती थी कि ब्रज की लुप्त हो रही लीला स्थलियों का संरक्षण किया जाए, ब्रजवासियों एवं ब्रजभक्तों को उनकी महिमा से अवगत कराया जाए, उनका दर्शन कराया जाए । इसके अतिरिक्त बृहद् ब्रज (ब्रज चौरासी कोस के बाहर का ब्रज ) जिसके बारे में किसी को नहीं पता, केवल शास्त्रों में और महापुरुषों के ग्रन्थों में ही जिसका उल्लेख किया गया है, श्रीबाबा की विशेष इच्छा थी कि ब्रज के इस क्षेत्र के बारे में विस्तृत जानकरी जुटाई जाए और लोगों को इसका ज्ञान कराया जाये । इसके लिए हम लोगों को बाबा महाराज ने खोज

करने के लिए भेजा । हम लोग मथुरा से 'मथुरा माहात्म्य' तथा 'ब्रज वैभव' और अन्य बहुत से ग्रन्थ ढूँढकर लाये । ये ग्रन्थ हमें मथुरा के प्राचीन संग्रहालयों तथा पुराने पुस्तक विक्रेताओं से उपलब्ध हुए । बाबा महाराज ने हम लोगों को बृहद् ब्रज के प्रत्येक गाँव में भेजा, लगभग १३०० गाँवों का हमने भ्रमण किया । वहाँ के बहुत से ब्रजवासियों से हमने बातचीत की, उनसे पूछताछ करी कि उनकी क्या परम्परा है, उनका क्या इतिहास है ? उसी के आधार पर बाबा महाराज की प्रेरणा से 'रसीली ब्रजयात्रा – भाग २' ग्रन्थ की रचना की गयी । जिसमें बृहद् ब्रज के श्रीकृष्ण लीला सम्बन्धी लगभग सभी गाँवों का वर्णन किया गया है ।

बाबा महाराज ने स्वयं भी ब्रज की लीला स्थलियों की बहुत खोज की । इसके लिए बाबा स्वयं ब्रज की परिक्रमा अकेले ही किया करते थे । उन्होंने ब्रज चौरासी कोस की अकेले ही बहुत सी परिक्रमायें की थीं । रमण रेती के गुरु शरणानन्द जी के गुरुदेव श्रीहरिनामदासजी महाराज के साथ सर्वप्रथम बाबा ने ब्रज चौरासी कोस की परिक्रमा की थी । एक बार बाबा मुझे भी ले गये थे और श्रीहरिनामदासजी महाराज का दर्शन कराया था ।

एक बार हम लोग ब्रज परिक्रमा के लिए निकले । यहाँ से बहुत से पराँठे बनवाकर ले गये थे । हम लोग मथुरा में रुके । मथुरा में पुल के पास श्मशान घाट था । वहाँ हम लोग सो गये । बाबा महाराज हम लोगों से पहले दाऊजी चले गये ।  हम लोगों के सोते समय पराँठे कुत्ते खींच ले गये । हमारे पास पैसे भी नहीं बचे । हम लोगों को बहुत भूख लगी । बाबा के कठोर अनुशासन के कारण उनका भय भी बहुत था । बाबा की किसी बात पर हम लोग 'क्यों' शब्द का प्रयोग नहीं कर सकते थे और 'भूल गये' शब्द का प्रयोग कर दिया तो फिर बहुत पिटाई होती थी । जब हम लोग बाबा के पास भूखे पहुँचे तो उनके पास सत्तू था । उन्होंने हम लोगों को सत्तू खिलाया और वे हमसे नाराज नहीं हुए । बाबा ने हम लोगों से कहा कि तुम लोग रमण रेती चले जाओ और वहाँ भोजन कर लो । रमणरेती हम लोग गये तो वहाँ के भोजनालय में केवल ब्राह्मणों का प्रवेश था । इसके अलावा वहाँ कोई पैंट पहनकर नहीं जा सकता था । हमारे साथ कृष्णकान्त शास्त्री भी थे । जब वे रमण रेती के भोजनालय में गये तो उनसे पूछा गया कि क्या आप ब्राह्मण हैं तो उन्होंने कहा कि हम सब ब्राह्मण हैं । हम लोग अन्दर चले गये और वहाँ प्रसाद पाया । इसके बाद बाबा महाराज हम लोगों को दाऊजी में दर्शन कराने ले गये । बाबा ने हमें ब्रज के सभी स्थलों का दर्शन कराया । ब्रज की समस्त लीलास्थलियों के प्रति बाबा की अनन्य निष्ठा थी और वे इनके दर्शन के लिए अकेले ही भ्रमण किया करते थे । वर्ष में एक बार बाबा हम लोगों के साथ ब्रजयात्रा किया करते थे । यमुना किनारे बाबा बहुत जाया करते थे । एक बार बरेली के भी कुछ लोग थे, उनके साथ सात लोगों की हमारी टीम थी । यमुना किनारे के कई गाँवों का दर्शन कराने बाबा हम लोगों  को ले गये । वहाँ खाने के लिए कुछ भी नहीं था किन्तु वहाँ पर इतने बड़े तरबूज थे कि एक तरबूज बीस किलो का था । बाबा ने एक तरबूज मँगवाया, वह बहुत बड़ा था, उसको हम सभी ने खाया । बाबा तो गाँवों से भिक्षा कर लेते थे । भिक्षा के अतिरिक्त किसी से पैसा आदि कुछ नहीं लेते थे । ब्रज परिक्रमा के लिए बाबा के साथ मैं, पण्डितजी और एक-दो अन्य व्यक्ति जाते थे । उस समय बरेली के लोग बाबा के घनिष्ठ सम्पर्क में थे । वे भी बाबा के साथ ब्रज दर्शन के लिए जाया करते थे ।

बाबा महाराज ने मुझे कुश्ती लड़ना सिखाया था । वे मुझे दंगलों में कुश्ती लडने के लिए भेजा करते थे । उन्होंने मुझसे कहा था कि कभी भी दंगल में पिटकर मत आना । बाबा ने मुझे इतना पुष्ट बना दिया था कि जितने भी दंगलों में मैंने कुश्ती लड़ी, कहीं भी पिटकर, पराजित होकर नहीं आया । जब मैं दंगल में विजयी होकर आता था तो बाबा बहुत प्रसन्न होते थे । बाबा हम बालकों को अखाड़े में कुश्ती करवाते थे तो कुछ लोगों का बाबा के प्रति अभाव भी हो गया कि ये कैसे बाबा हैं जो कुश्ती करवाते हैं ? बाबा महाराज अपने अनुयायियों को हर तरह से मजबूत बनाना चाहते थे । भक्ति का अभिप्राय यह नहीं है कि भक्त शारीरिक रूप से कमजोर हो । भक्त को हृदय और शरीर, दोनों तरह से शक्तिशाली होना चाहिए । बाबा का कहना था – 'शरीर माध्यम खलु धर्म साधनम्' – जब शरीर है तब तो तुम धर्म करोगे, नहीं तो

धर्म का पालन नहीं कर पाओगे । बाबा का इस बात पर जोर रहता था कि शरीर भी स्वस्थ होना चाहिए । इसलिए बाबा ने अपने सभी अनुयायियों को वीर बनाया और भक्त बनाया । चैतन्य महाप्रभु की तरह बाबा महाराज ने कार्य किया, लाखों लोगों को भक्ति से जोड़ा ।

प्रश्न – ब्रज के बाहर न जाने का बाबा का नियम कैसे बना ?

भइयाजी – बाबा जब ब्रज में आये थे तो अपने प्रारम्भिक दिनों में भी वे प्रचार करते थे । एक बार वे अलवर और जयपुर में प्रचार करने गये । अलवर के बहुत से भक्त बाबा से प्रभावित होकर उनसे जुड़ गये । अलवर में बाबा ने एक दिन में ३२ जगह व्याख्यान दिए थे । बहुत सी सभाओं को सम्बोधित किया था । एक बार किसी सभा में एक लड़की ने बाबा से ईश्वर प्राप्ति के विषय में प्रश्न पूछा, उसके प्रश्न का उत्तर देते समय बाबा के मन से आवाज आई कि क्या तुम्हें स्वयं ईश्वर की प्राप्ति हो गयी है, जो इस तरह उत्तर दे रहे हो । मन की इस आवाज को अनुभव करके बाबा को ऐसा झटका सा लगा कि उन्होंने तुरन्त ही अपना व्याख्यान समाप्त कर दिया और अलवर में उनके कार्यक्रमों के जो आयोजक थे, उनसे कहा कि आप मुझे अपनी गाड़ी के द्वारा ब्रज की सीमा 'डीग' तक छोड़ दीजिये, मैं वहाँ से बरसाना चला जाऊँगा । यदि आप नहीं छोड़ेंगे तो मैं पैदल ही बरसाना चला जाऊँगा । बाबा के बरसाना जाने के दृढ़ निश्चय को सुनकर वह सज्जन बाबा को अपनी गाड़ी से डीग तक छोड़ आये और फिर वहाँ से बाबा पैदल ही बरसाना आ गये । उसके बाद फिर बाबा ने ब्रज के बाहर न जाने का नियम बना लिया ।

प्रश्न – बाबा महाराज के प्रेम, उनके वात्सल्य के बारे में आपके क्या विचार हैं ?

भइयाजी – बाबा तो वत्सलता की मूर्ति हैं । उनका प्यार कैसा है, इसे इस बात से समझा जा सकता है कि उन्होंने मुझे बहुत अधिक मारा-पीटा, कठोर अनुशासन में रखा, इसके बावजूद भी मैं मान मन्दिर से उनको छोड़कर अलग नहीं हुआ । बाबा महाराज प्यार भी बहुत करते थे और उनका प्रेम सच्चा प्रेम था । जितने भी लोग बाबा से जुड़े, वे उनके प्रेम के कारण ही जुड़े । बाबा हम लोगों के खाने-पीने का, हर छोटी-छोटी चीज का इतना ध्यान रखते थे कि जितना एक माँ भी नहीं रख सकती । जो भी समझदार बच्चा होता है, वह इतना समझने लगता है कि मेरे प्रति इनका कितना प्रेम है । बाबा ने अपने सम्पर्क में रहने वाले सभी बच्चों को बहुत अधिक स्नेह प्रदान किया परन्तु जिन बालकों के घर वाले नहीं चाहते थे कि ये बाबा के पास रहें तो उन्होंने बड़े होने पर इन बालकों का विवाह करके इन्हें संसार के बन्धन में जकड़कर बाबा से दूर कर दिया । मान मन्दिर वैराग्य का स्थल था, वहाँ इतना कठोर अनुशासन था कि कोई बालक किसी स्त्री जाति की ओर, किसी लड़की की तरफ आँख उठाकर भी नहीं देख सकता था । इतना कड़ा नियम था कि हर समय नीचे दृष्टि करके चलना होता था । बाबा महाराज बालकों को ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध में प्रतिदिन शिक्षा देते थे । वे कहते थे कि ब्रह्मचर्य ही ईश्वर है । बाबा शास्त्रों के सिद्धान्त सम्बन्धी श्लोकों को बालकों से प्रतिदिन उच्चारण करवाते थे । बाबा जब गाँव में भिक्षा माँगने जाते थे तो मुझे अकेले ही मान मन्दिर में छोड़ जाते थे । उस समय मान मन्दिर में घनघोर सन्नाटा पसरा रहता था और मैं उस समय छोटा बालक ही था । मुझे एकान्त में बहुत भय लगता था । रात्रि के समय मधुकरी माँगकर बाबा गाँव में कीर्तन करवाकर ११ बजे लौटकर आते थे । कभी-कभी आँधी इतनी तेजी से आती थी कि मानगढ़ की किवाड़ें जोर-जोर से भयानक ध्वनि उत्पन्न करती थीं । कबूतर पंख फड़फड़ाते थे और बोला करते थे । झरोखों से ऐसी भयानक हवा आती थी कि प्राण निकल जाएँ । उस समय मान मन्दिर का इतना भयावह दृश्य था । भयंकर सर्प -बिच्छू यहाँ रहा करते थे । शायद ही कोई दिन ऐसा होता होगा, जब हम लोगों को सर्प-बिच्छू न काटते हों । उनके काटने पर असहनीय पीड़ा होती थी । बाबा महाराज इसके उपचार के लिए हमें दवा बताते थे कि सरसों का तेल लो और आक के पत्ते को गर्म करके उसका रस निकालो तथा उस रस को गर्म करके उसकी मालिश करो । जिसको बिच्छू काटता था, उस बालक की इस तरह से बाबा मालिश करवाते थे । उससे बिच्छू का विष कम हो जाता था । बिच्छू के काटने पर प्राण जाने के

समान भयंकर कष्ट होता था । मानगढ़ में उस समय इतने बिच्छू थे कि जहाँ भी हाथ रखो, वहीं बिच्छू डंक मार देता था । गलती से यदि हाथ दीवार पर रख दिया तो वहीं बिच्छू काट लेता था । बाबा को भी बहुत बार बिच्छू ने काटा था ।

बाबा महाराज को झूठ बोलना बिलकुल भी पसंद नहीं था । एक बार बाबा रात्रि को भिक्षा माँगकर गाँव से मन्दिर में आये । उस समय मैं मन्दिर में ही था और मुझे हल्की नींद आ गयी थी, इसलिए दरवाजा खोलने में मुझे थोड़ी देर हो गयी थी । बाबा ने मुझसे पूछा कि क्या तू सो रहा था ? मैंने झूठ बोल दिया – नहीं । इतना सुनते ही बाबा ने मेरे गाल पर एक थप्पड़ लगा दिया । दुबारा बाबा ने पूछा – तू सो रहा था । पुनः मैंने कहा - नहीं । बाबा ने फिर से एक थप्पड़ लगाया । इस तरह बार-बार झूठ बोलने पर बाबा ने मुझे चार-पाँच थप्पड़ लगाये । अन्त में बाबा के फिर से पूछने पर मैंने कहा – जी हाँ । बाबा के कड़े शासन के कारण किसी का उनके सामने झूठ बोलने का साहस नहीं होता था और न ही जीवन में कभी प्रमाद आ सकता था । बाबा के अनुशासन के कारण आलस्य और प्रमाद का तो किसी के अन्दर नामोनिशान भी नहीं था । सभी लोग उस समय मान मन्दिर में प्रातःकाल ४ बजे जग जाते थे । यदि कोई नहीं जगता तो बच्चे ही आपस में पानी डालकर उसे जगा देते थे ।

किसी भयंकर रोग के कारण मरणासन्न स्थिति आ जाने पर भी बाबा महाराज ने कभी यह नहीं कहा कि मुझे कष्ट है और आज तक भी वे कभी किसी से अपने कष्ट के बारे में नहीं कहते हैं ।

एक बार बाबा को भगन्दर रोग हो गया था । हम लोगों को कभी पता ही नहीं चला कि बाबा को क्या बीमारी है ? रोग अपनी चरम अवस्था में पहुँचा तो बाबा बेहोश से होने लगे । हम लोगों ने बाबा के लिए कीर्तन किया । उस समय एक ट्रैक्टर के द्वारा हम लोग बाबा का उपचार कराने के लिए उन्हें कोसी में डॉक्टर दुर्गा दास के पास ले गये । उस समय तक भगंदर फूट चुका था । डॉक्टर दुर्गा दास ने उपचार किया । बाबा महाराज ने अपनी ओर से कभी नहीं कहा कि मुझे कोई कष्ट है । बुखार आने पर भी कभी नहीं बताया ।

प्रश्न – एक बार बाबा महाराज मान मन्दिर छोड़कर क्यों चले गये थे ?

भइयाजी – मेरे विचार से अपने स्वाभाविक वैराग्यवश अथवा कोई उनकी नाराजगी थी अथवा जब यहाँ मान मन्दिर में बहुत भीड़-भाड़ होने लगी तो एकान्तवास की दृष्टि से बाबा महाराज मौरोली चले गये थे लेकिन हम लोग उनको ढूँढ़कर वापस मान मन्दिर ले आये । तीन दिन बाद ही उनका पता चल गया था । तीन दिन में ही बाबा महाराज ने मौरोली गाँव में कीर्तन करना प्रारम्भ कर दिया था । वहाँ के सारे ब्रजवासी बाबा के कीर्तन में सम्मिलित हुए ।

प्रश्न – यमुना यात्रा के बारे में थोड़ा बताइए ।

भइयाजी – श्रीबाबा महाराज यमुना जी के शुद्धिकरण के बारे में बहुत चिन्तित थे । इसी उद्देश्य से उन्होंने सन् २०१० में वृन्दावन कुम्भ बैठक में मान मन्दिर का शिविर लगवाया था । आगे चलकर जब पता चला कि यमुनाजी तो ब्रज में ही नहीं, उन्हें हरियाणा में हथिनी कुण्ड बैराज के माध्यम से वहीं रोक दिया गया है । तब तो बाबा महाराज के मन में विचार आया कि यमुनाजी को ब्रज में लाने का प्रयास करना चाहिए और इसी उद्देश्य से उन्होंने जयकृष्णदासजी को प्रेरित किया तो उन्होंने २०११ में यमुना यात्रा निकाली, उस समय केन्द्र में कांग्रेस की सरकार थी । वे दिल्ली में सरकारी अधिकारियों के दबाव में आ गये थे । दबाव आ ही जाता है । सन् २०१५ की यमुना यात्रा में हम पर भी बहुत दबाव था । उस यमुना यात्रा में बाबा ने मुझसे कहा था कि तुम दिल्ली से यमुनाजी को बिना ब्रज में लाये लौटकर मत आना । उस यात्रा में बाबा ने कहा था कि तुम लोग अपने को अधिक प्रकाशित मत करना और बाहर से आये सभी लोगों को साथ लेकर चलना । इसीलिए उस यात्रा में हम अधिक सामने नहीं आते थे । उस समय हमने बाहर के सभी वैष्णवों को, व्यासाचार्यों को, साधु-सन्तों को यमुना यात्रा के लिए एकत्रित किया था । ये सभी यमुना यात्रा में दिल्ली गये थे और वह बहुत ही अद्भुत यात्रा थी । लाखों लोग ब्रज से दिल्ली तक पैदल गये थे । दिल्ली में हमें आश्वस्त किया गया कि आपका काम हो जाएगा, आप लोग आश्वस्त रहिये । हम मोदीजी से भी मिलकर आये थे । उनके अधीनस्थ मन्त्री ने बताया कि मोदीजी ने कहा

है कि यमुनाजी का कार्य दो-तीन महीने में हो जाएगा। इसलिए आप लोग ब्रज वापस चले जाइए। यह घोषणा स्वयं मोदीजी के मन्त्री ने जन्तर-मन्तर पर आकर लाखों यमुना भक्तों के समक्ष की थी। उस समय मेरे ऊपर सभी का दबाव बना कि अब तो मोदीजी स्वयं कह रहे हैं, इसलिए वापस बरसाना चलो परन्तु यह हम लोगों के साथ धोखा हो गया और सरकार ने आज तक यमुनाजी को ब्रज में लाने के सन्दर्भ में कुछ नहीं किया।

प्रश्न – पसोपा में आदिबद्री क्षेत्र के पर्वतों के सम्बन्ध में जो धरना दिया गया था, उसके बारे में कुछ बतायें।

भइयाजी – ५५० दिनों तक यह धरना चला था। इसमें भी लोगों के हृदय में मरने-मिटने की भावना थी। लगभग १३ साधुओं ने राजस्थान सरकार को आत्मदाह करने की धमकी दी थी। उसमें मान मन्दिर के एक सन्त विजय दास महाराज जी ने सचमुच में ही अपने शरीर पर पेट्रोल छिड़ककर आग लगा ली और इस तरह उन्होंने तो पर्वतों की रक्षा हेतु अपने प्राणों का ही बलिदान कर दिया था। यह आन्दोलन भी बाबा महाराज के संकल्प का ही खेल था। पसोपा ग्राम में जितनी संख्या वहाँ के ग्रामवासियों की नहीं थी, उससे अधिक संख्या पुलिस के सिपाहियों की थी। हम लोगों ने बहुत संयम से काम लिया, भारी आक्रोश में भरे गाँव के युवकों को रोक लिया, नहीं तो कितने ही पुलिस वाले भी हताहत हो जाते। पसोपा के सभी ग्रामवासी पुलिस वालों पर हावी हो चुके थे। वहाँ के स्थानीय ब्रजवासियों ने इस आन्दोलन में बहुत सहयोग किया। केवल एक गाँव नहीं बल्कि हमने उस समय सारे मेवात क्षेत्र को इस आन्दोलन से जोड़ दिया था। मुस्लिमों ने भी इस आन्दोलन में बहुत सहयोग किया था। ये सभी मुस्लिम बाबा महाराज से मिलने मान मन्दिर भी आये थे। बाबा ने उनको प्रेरणा दी कि यह ब्रजभूमि तुम्हारी भी है। इसकी रक्षा करना तुम्हारा भी कर्त्तव्य है।

प्रश्न – सन् २०११ की ब्रजयात्रा के दौरान जब हृदयाघात के कारण श्रीबाबा महाराज को अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा था और उनके स्वास्थ्य की स्थिति अत्यधिक गम्भीर अवस्था को प्राप्त हो गयी थी, उस समय की परिस्थिति के बारे में थोड़ा प्रकाश डालें।

भइयाजी – उस समय जब बाबा महाराज वनचारी ग्राम में बीमार हुए थे तो निश्चित ही उनके सीने में काफी दर्द हुआ होगा परन्तु उन्होंने किसी को कुछ बताया नहीं। जब वनचारी पड़ाव के दौरान यात्रा से लौटने के बाद बाबा अपने बिस्तर पर गिर पड़े थे, उस समय उनके हृदय का वाल्व फट चुका था, तब बाबा को कोसी के अस्पताल में ले जाया गया और वहाँ से गुरुग्राम स्थित मेदान्ता अस्पताल में भर्ती कराया गया था। जब बाबा के स्वास्थ्य में थोड़ा सुधार हुआ तो मैं अस्पताल में बाबा महाराज को देखने गया था। उस समय वे बिलकुल ठीक थे। जब बाबा अस्पताल से मान मंदिर लौटे तो स्वयं अपने कमरे में चलकर गये थे।

प्रश्न – बाबा के आने के पहले और उनके मान मन्दिर में रहते समय ब्रज के जिस कुख्यात डाकू जहान ने इस मन्दिर में कब्ज़ा कर लिया था, यहाँ से उसके जाने के बाद क्या कभी आप उससे मिले थे?

भइयाजी – हाँ, जब वह साधु बन गया था और महावन में रहने लगा था, तब मैंने उसको देखा था।

प्रश्न – पण्डितजी की माताजी श्रीमती यमुनादेवी जी का बाबा महाराज के प्रति कैसा समर्पण था?

भइयाजी – वास्तव में श्रीराधा रस मन्दिर में जो अद्भुत परिवर्तन आया, वह माताजी की ही देन थी। वे अपनी दोनों पुत्रियों को बाबा महाराज के कीर्तन में प्रतिदिन लेकर जाती थीं और धीरे-धीरे उन्होंने अपने सारे परिवार के सदस्यों को बाबा के प्रति समर्पित कर दिया था। बाबा उनसे जैसा कहते थे, वे वैसा ही करती थीं और इसी बात पर गाँव वालों ने उनका विरोध किया कि तुम अपनी पुत्रियों का विवाह नहीं कर रही हो, उनको बाबा के कीर्तन में नचाती-गवाती हो परन्तु यमुना माताजी ने सारे गाँव वालों में से किसी की बात नहीं मानी। गाँव में पंचायत हुई और उनको बुलाया गया। उनको बाबा महाराज का त्याग करने को कहा गया परन्तु उन्होंने सभी को दो टूक जवाब दिया और पंचायत की बात को मानने से स्पष्ट इनकार कर दिया। उन्होंने कह दिया कि मेरे लिए तो बाबा ही भगवान् हैं। उनका ऐसा बाबा महाराज के प्रति समर्पण था।

प्रश्न – बाबा के विरोध में कई पंचायतें हुईं । एक पंचायत में सखीशरणमहाराज जी ने चावी दिखा दी थी, वह क्या घटना थी ?

भइयाजी – कई गाँवों की वह पंचायत गह्वर वन के राधा सरोवर के तट पर हुई थी । बाबा महाराज ने श्रीसखीशरण महाराज को मान मन्दिर की चावी देकर भेजा था और कहा था कि यदि विरोधी लोग यह कहें कि रमेश बाबा मान मन्दिर को छोड़ कर चले जाएँ तो तुम उनको मन्दिर की यह चावी दे देना और कह देना कि ठीक है, बाबा महाराज ने मानगढ़ का त्याग कर दिया है ।

एक बार बाबा के विरोधी कुछ गाँवों के प्रतिनिधि बाबा महाराज से बोले कि तुम्हारे विरुद्ध ऐसे-ऐसे आरोप हैं, ऐसा क्यों है ? बाबा महाराज ने कहा कि इस क्यों का कोई जवाब नहीं है । उन्होंने गाँव वालों से कहा कि यदि मैं आप लोगों से कहूँ कि आप किसी की लड़की को भगाकर ले गये थे, क्यों ले गये थे, इसका आपके पास क्या जवाब है ? लोगों ने कहा कि हम तो किसी की लड़की को नहीं भगा ले गये थे । बाबा ने कहा कि यही बात मैं अपने विरुद्ध कहता हूँ । गाँव वालों की बातों को सुनकर बाबा ने उनसे ऐसे-ऐसे प्रश्न किये कि उनसे उत्तर देते नहीं बना और फिर सभी निराश होकर चले गये । इस तरह बाबा महाराज ने बहुत संघर्ष सहन किया है ।

प्रश्न – बाबा महाराज का कृपालुजी महाराज के साथ कैसा सम्बन्ध रहा है ?

भइयाजी – बाबा महाराज का कृपालुजी महाराज से प्रयाग और उनके आश्रम मनगढ़ मे ही काफी सम्पर्क रहा है, उसके बारे में मुझे पता नहीं है परन्तु कृपालु महाराज बाबा से मिलने के लिए मान मन्दिर में कई बार आ चुके थे । श्रीराधा रस मन्दिर में भी वे आया करते थे । जब भी वे यहाँ आते थे तो गह्वर वन में आकर राधा सरोवर के तट पर बैठा करते थे ।

प्रश्न – इस्कॉन के श्रीराधानाथ महाराज भी आपके समक्ष ही मान मन्दिर में आये थे ?

भइयाजी – हाँ, वे मेरे सामने ही मान मन्दिर में आये थे और एक-दो महीने यहाँ बाबा महाराज की सन्निधि में रहे थे । वे बाबा महाराज से बहुत अधिक प्रभावित थे और उस समय तो वे हिन्दी भाषा भी नहीं जानते थे । उन्हें केवल अंग्रेजी भाषा का ही ज्ञान था । वे अमेरिका से सीधे बाबा महाराज से मिलने यहाँ आये थे । उस समय तक तो इस्कॉन संस्था से भी उनका कोई सम्बन्ध नहीं था और न ही प्रभुपाद जी से उन्होंने गुरु दीक्षा ग्रहण की थी । उस समय मान मन्दिर में एक बड़ा सा पत्थर था, उसी पर वे सोया करते थे और उन्हें सर्दी बहुत लगती थी, बहुत जल्दी उन्हें जुकाम हो जाता था । हम लोग टूटी-फूटी अंग्रेजी के शब्द बोलकर उनसे बात कर लिया करते थे । बाबा महराज को तो अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान था । अतः उनसे वे अंग्रेजी में ही बात करते थे ।

प्रश्न – मौनी बाबा के बारे में कोई संस्मरण हो तो बताइये ।

भइयाजी – हाँ, मैंने उनके गह्वर वन में कई बार दर्शन किये थे । उनके शरीर से स्वतः अग्नि प्रकट हुई थी । वे रस कुञ्ज के पीछे स्थित कुएँ में प्रतिदिन स्नान करने के लिए आते थे । वे काफी लम्बे थे । अरनी आदि की पत्तियों को कूटकर उबालकर पिया करते थे । जब उनका गोलोकवास हो गया तो सबसे पहले बाबा महाराज और मैंने ही उनके कमरे में प्रवेश किया था । उनकी कुटिया में केवल बैठने मात्र की जगह थी और लेटने तक का उसमें स्थान नहीं था । वे अपने जीवन में कभी सोते ही नहीं थे । उनके कमरे में फटी सी गुदड़ी बिछी थी । कितनी ही गुदड़ियाँ गल चुकी थीं । उसी पर वे बैठते थे ।

प्रश्न – रस कुञ्ज में जो बालिकायें भक्तिमय जीवनयापन की दृष्टि से रहीं, उसको लेकर क्या बाबा महाराज का विरोध किया गया था ?

भइयाजी – हाँ, प्रारम्भ से ही इसका विरोध किया गया । सबसे पहले बाबा की माताजी की सेवा के लिए पण्डितजी की दोनों बहनें रहीं थीं, उनका भी लोगों ने विरोध किया । इसके बाद धीरे-धीरे बालिकाओं की संख्या में वृद्धि होती चली गयी । श्रीबाबा महाराज की ऐसी जीवन शैली थी कि विरोधियों ने उनकी जिन बातों को गलत बताया, बाबा ने उनकी

बात को स्वीकार ही नहीं किया । वे अपने सिद्धान्तों पर दृढ़तापूर्वक अचल बने रहे । उनका कहना था कि जीव मात्र को भगवद्भक्ति करने का अधिकार है । इसलिए स्त्री-पुरुष, जो कोई भी उनके मार्गदर्शन में यहाँ भक्ति करने के लिए रहता तो बाबा किसी को मना नहीं करते थे । बाबा महाराज ने यहाँ नारियों को आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाने का अभूतपूर्व कार्य किया । नारी सशक्त बनें और भगवद् आश्रय के बल पर आगे बढ़ें, इसके लिए बाबा महाराज ने बहुत प्रयास किया ।

प्रश्न – जब रस कुञ्ज की इमारत का निर्माण हुआ था तो प्रशासन की ओर से इसे ध्वस्त करने का आदेश आया था तब बाबा महाराज की क्या प्रतिक्रिया थी ?

भइयाजी – चूँकि मेरे पिताजी ने गह्वर वन को वन विभाग को हस्तान्तरित कर दिया था परन्तु जिस समय पर्वतों के खनन से सम्बन्धित आन्दोलन चल रहा था, तब खनन माफिया हमसे नाराज चल रहे थे, अतः उन्होंने एस.डी.एम. को रस कुञ्ज के निर्माण के विरुद्ध रिपोर्ट कर दी । एस.डी.एम. यहाँ किसी उत्सव में आया था, उसने इसे देख लिया । उसने डी.एम. को इसकी रिपोर्ट कर दी और फिर डी.एम. की ओर से इसको तोड़ने का आदेश आ गया । इसके बाद हम लोग लखनऊ गये और वन विभाग से सम्पर्क करके इसका लैंड ट्रान्सफर करके इस इमारत को लीज (पट्टे) पर ले लिया, लीज का हम लोग किराया देते थे । यह स्थान हमने सरकारी विभाग को ३० वर्षों के लिए किराए पर प्रदान कर दिया है । सात-आठ वर्ष होने वाले हैं । इसके बाद पुनः हमें इसके लिए प्रयास करना होगा । वन विभाग में गह्वर वन के अन्य भी कई भवन हैं । गोपाल कुटी आदि के आगे निर्माण हुआ है, जो वन विभाग के नियम के विरुद्ध है परन्तु उन लोगों को द्वेष तो केवल हम लोगों से ही है ।

जब डी.एम. के द्वारा रस कुञ्ज भवन को तोड़ने का आदेश आया तो बाबा महाराज ने कहा था कि यहाँ भगवान् की आराधना होती है, कोई पाप नहीं होता है, इसलिए स्वयं ब्रह्मा भी इस भवन को नहीं तोड़ सकते हैं । रस कुञ्ज कभी टूट नहीं सकता है । बाबा महाराज की बात सत्य हो गयी और डी. एम. का आदेश निष्प्रभावी हो गया ।

# परम निधि 'श्रीब्रज'

**बाबाश्री के सत्संग 'श्रीराधासुधानिधि' (१५/१२/१९९९) से संकलित**

श्रीभट्टदेवाचार्यजी ने कहा है -

**रे मन वृन्दा विपिन निहार । यद्यपि मिलें कोटि चिन्तामणि तदपि न हाथ पसार ॥**

**विपिन राज सीमा के बाहर हरिहू को न निहार । जय श्री भट्ट धूल धूसरित यह तन आसा उर धार ॥**

करोड़ों चिन्तामणि भी यदि इस धाम के बदले मिल जाएँ तो वे सब तुच्छ हैं । श्रीधाम का एक तिनका भी इन सब चीजों को तुच्छ बना देता है । जैसे -

**त्वयाकण्ठं पीतं यदि परमपीयूषमपि किं ततो यद्युर्वश्याः स्तनयुगलमाश्लेषि किमतः ।**

**यदि ब्रह्मानन्दामृतमपि समास्वादि किमतो यतस्थुत्कृत्येदं व्यसृजदपि वृन्दावनतृणम् ॥** (वृन्दावनमहिमामृत शतक)

किसी ने भर पेट अमृत पी लिया, सबसे बड़ा भोजन अमृत है । तीनों लोकों में उससे अधिक मीठा और सुन्दर भोजन कुछ नहीं है, जो अमर कर देता है, अजर कर देता है, जिसको पीने से बुढ़ापा नहीं आता है । शरीर में सदा शक्ति भरी रहती है । इन्द्रियाँ कभी दुर्बल नहीं होती हैं । यदि किसी ने वैसा अमृत भी पी लिया तो क्या हुआ ? तीनों लोकों में सबसे अधिक सुन्दरी है उर्वशी । उससे अधिक सुन्दरी कोई नहीं है, जिसके आलिंगन के लिए इन्द्र भी तरसते हैं । यदि अमृत पीकर तुमने उर्वशी के स्तनयुगल का आलिंगन भी कर लिया तो क्या हुआ ? जिसने अमृत को पिया है,

वही उर्वशी के शरीर का भोग कर सकता है । सभी देवताओं को उर्वशी को भोगने का अधिकार नहीं है । यदि तुमको उर्वशी के निरावरण शरीर का भोग करने को मिल गया, तो भी क्या ? यदि ब्रह्मानन्द भी मिल गया तब भी क्या ? वृन्दावन धाम का तो एक तिनका भी इन सब पर थूक देता है । ब्रह्मानन्द को यदि गुणा किया जाए परार्ध संख्या शंख, महाशंख से किन्तु फिर भी वह भक्ति के समुद्र की एक बूँद को भी नहीं पा सकता है । बूँद तो क्या एक परमाणु को भी नहीं पा सकता है । इससे पता चलता है कि इस धाम के स्थल सभी को तुच्छ बना देते हैं । जिसका यहाँ प्रेम हो जाता है, वह और तो क्या वैकुण्ठ आदि को भी तुच्छ समझता है, यह पहचान है । जो थोड़े से कष्ट में और थोड़े से सुख के लिए धाम से बाहर भाग जाता है, इसका मतलब कि उसके अन्दर धाम निष्ठा नहीं है । निष्ठा वह है, जिसके बारे में भगवान् ने गीता में कहा है – "यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः ।" जिसको पाने के बाद ऐसा विचार बना रहे कि इससे अधिक कुछ नहीं है, तब समझो कि उसकी निष्ठा है । जैसे मान लो कि हमको पचास रुपये मिले और हम समझते हैं कि सौ रुपये का नोट उससे बड़ा है । सौ रुपये मिले तो समझते हैं कि पाँच सौ रुपये बड़े हैं, इसी तरह भगवान् कहते हैं कि जिसको पाने के बाद यह विचार पैदा हो जाए कि इससे बड़ा कुछ भी नहीं है तो समझो कि निष्ठा बन गयी । "यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते ।" उस निष्ठा पर पहुँचने के बाद उसकी पहचान है कि भयानक से भयानक कष्ट उसको हिला नहीं सकते । हम लोग तो थोड़ी सी बात पर चिन्ता करने लगते हैं कि लड़का बीमार है, लड़की बीमार है । थोड़ा सा दुःख भी विचलित कर देता है । भगवान् कहते हैं कि जब तुम्हारी निष्ठा हो जायेगी तो संसार के बड़े से बड़े दुःख भी तुमको हिला नहीं सकते । गुरुणा – गुरुणा कहते हैं बहुत भारी दुःख को, जिसमें सर्वनाश हो जाता है । जैसे राजा बलि को देखो, हम लोगों के तो अधिक से अधिक हजार रुपये, लाख रुपये, करोड़ रुपये नष्ट हो जायेंगे किन्तु राजा बलि का तो तीनों लोकों का राज्य चला गया, उसके बाद उनको वरुण के पाश में बाँध दिया गया । उनके सभी कुटुम्बी जनों की पिटाई हुई । इसके बाद भी उन्होंने भगवान् से कहा – 'प्रभो ! यह आपकी बहुत बड़ी कृपा है ।' राजा बलि के पितामह प्रह्लादजी ने उनको यही शिक्षा दी थी कि कृपा क्या है ? हम लोग समझते हैं कि पैसा मिल गया तो कृपा हो गयी, स्त्री-पुत्र मिल गये तो कृपा हो गयी, बेटा-बेटी स्वस्थ हो गये, यह कृपा है । वस्तुतः इसको कृपा नहीं कहते हैं । यह सब तो व्यापार है । हम लोग व्यापारी हैं, मतलबी यार हैं । भगवान् के प्रति प्रेम नहीं चाहते, अपनी स्वार्थ पूर्ति ही चाहते हैं । प्रेम तो अभी करोड़ों कोस दूर है । प्रेम की तो अभी शुरुआत भी नहीं हुई है । राजा बलि कहते हैं कि हमारे पितामह प्रह्लादजी ने शिक्षा दी थी – "किमात्मनानेन जहाति योऽन्ततः किं रिक्थहारैः स्वजनाख्यदस्युभिः ।" इस शरीर से क्या लाभ है ? थोड़ी देर में यह साथ छोड़ देगा । चाहे इसको कितना भी खिला-पिला लो, इसे लाड़-प्यार कर लो । मनुष्य दिन-रात शरीर को सुखी करने में ही लगा रहता है । चौबीस घंटे इसको खिलाने-पिलाने, नहलाने-धुलाने और अन्य तरह की सुविधाएँ देने में ही लगा रहता है, फिर भी एक दिन यह शरीर धोखा दे देता है, साथ छोड़ देता है । इसलिए प्रह्लादजी ने कहा कि इस शरीर से प्यार क्यों करते हो ? इसी प्रकार जिनको हम बेटा-बेटी समझते हैं, वे डाकू हैं । वे जीवन भर की कमाई सब धन-सम्पत्ति ले लेते हैं और हम लोग उन्हें प्रसन्नतापूर्वक देकर बड़े सुखी होते हैं । ये सब डाकू हैं, जो हँसकर सब सम्पत्ति ले लेते हैं । यह सम्पत्ति भगवत्सेवा में काम नहीं आती है । राजा बलि कहते हैं कि यह शिक्षा मेरे बाबा प्रह्लादजी बचपन में मुझे दिया करते थे ।

**किं जायया संसृतिहेतुभूतया मर्त्यस्य गेहैः किमिहायुषो व्ययः ॥** (भा.८/२२/९)

स्त्री बड़ी प्यारी लगती है, स्त्री को पति बड़ा प्यारा लगता है । ये सब केवल संसार के हेतु हैं, भोग देते हैं और फिर भोग के संस्कार ऐसे पड़ जाते हैं कि जीवन भर नहीं नष्ट होते हैं किन्तु हम लोग इसे बड़ा प्यार समझते हैं कि मेरी स्त्री बड़ी प्यारी है अथवा मेरा पति बड़ा प्यारा है । मनुष्य घर बना लेता है, बंगला-कोठी बना लेता है, उसमें उसकी सारी आयु नष्ट हो जाती है । जैसे चूहा एक बिल में अपना सारा जीवन बिता देता है, वह सोचता भी नहीं कि इस बिल के बाहर क्या है ? उसी प्रकार मनुष्य गृहासक्ति में मुक्तपने का आनन्द नहीं ले पाता है, आसक्ति में ही जकड़ा रहता है । साधु बनने के

बाद भी अपने आश्रम में, कुटिया में आसक्त रहता है । मुक्त होने की वह सोचता भी नहीं है । बस यही सोचता है कि यह हमारा कमरा है, हमारी कुटिया है । ये सब चीजें भक्ति की विरोधी हैं । मनुष्य इसे समझता नहीं है । निष्ठा तो वही है जैसा कि भगवान् ने गीता में कहा – यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः । जिसको पाने के बाद यह समझा जाए कि इससे बड़ी चीज संसार में कुछ भी नहीं है । चाहे सोने का पर्वत सुमेरु दे दिया जाए फिर भी उधर दृष्टि ही न जाए तो यह निष्ठा है । सच्चे भक्त का यही लक्षण है – **त्रिभुवनविभवहेतवेऽप्यकुण्ठस्मृतिरजितात्मसुरादिभिर्विमृग्यात् ।**

**न चलति भगवत्पदारविन्दाल्लवनिमिषार्धमपि यः स वैष्णवाग्र्यः ॥** (भा.११/२/५३)

तीनों लोकों की लक्ष्मी सामने लाकर रख दी गयी किन्तु भक्त को याद भी नहीं आ रही है कि सामने क्या रखा है ? हम लोग तो याद रखते हैं कि हमारे पास पाँच सौ रुपये हैं, एक हजार रुपये हैं, एक लाख रुपये हैं, दस लाख रुपये हैं । लोग घर छोड़कर धाम में आते हैं और याद रखते हैं कि हमने इतना धन छोड़ दिया । इसको छोड़ना नहीं कहते हैं । इसका मतलब यही है कि अभी तुमने कुछ नहीं छोड़ा । तुम्हारे दिमाग में स्मृति बनी है कि हमने कुछ बड़ी चीज छोड़ी है अर्थात् वह कोई बड़ी चीज थी । बस, यही तो माया है । जब तक मनुष्य माया को बड़ा समझे बैठा है तो त्याग कहाँ है ? त्याग तो भरतजी ने किया था, उनके बारे में भागवत में लिखा है – "यो दुस्त्यजान्दारसुतान् सुहृद्राज्यं हृदिस्पृशः ।"
भरतजी की स्त्रियाँ स्वर्ग की अप्सराओं से अधिक सुन्दर थीं । उनकी सन्तानें योग्य थीं । वे चक्रवर्ती सम्राट थे । उनके बड़े-बड़े सुहृद थे, उन सबको उन्होंने कैसे छोड़ा ?

**जहौ युवैव मलवदुत्तमश्लोकलालसः ॥** (भा.५/१४/४४)

युवावस्था में ही उनका मलवत् त्याग कर दिया । जैसे कोई जंगल में मल त्याग करने गया तो बाद में यह नहीं सोचता कि उस मल का क्या हुआ होगा ? मल वहीं पड़ा है कि सूख गया कि क्या हुआ ? इसको त्याग करना कहते हैं कि त्यागी हुई वस्तु की याद ही न आये । मल की कोई याद नहीं करता है और हम जैसे लोग याद करते हैं कि हम पचास हजार रुपये छोड़कर आये हैं यानि उस मल की याद बनी हुई तो छोड़ा कहाँ ? इसीलिए भगवान् गीता में कहते हैं – "यं लब्ध्वा चापरं ... ।" राधासुधानिधि के श्लोक १३ में ह्रस्व अर्थ में क प्रत्यय इसीलिए हुआ कि जो धाम में रहता है, उसको यहाँ की रज मिल गयी, फिर उसको चाहे कुबेर का राज्य दे दो, वह उधर देखता ही नहीं है और यदि देखता है तो इसका मतलब है कि अभी वह धाम की निष्ठा वाला नहीं है । अभी तो वह रुपये का बण्डल बाँध रहा है । इसीलिए कहा गया है – "वृन्दावन साँचो धन भैया ।" सच्चा धन भगवान् का धाम है । सच्चा धन वह नहीं है, जिसे हम तिजोरी में बन्द करके रखते हैं । वह तो मौत है । "कनक कूट कोटिक लगि तजिये, भजिये कुँवर कन्हैया ।" एक-दो लाख रुपये नहीं, करोड़ों सोने के पहाड़ मिल जाएँ, फिर भी उनको मत देखो, तब समझो कि धाम में प्रेम हुआ है ।

एक व्यक्ति ब्रज यात्रा के तीन-चार महीने पहले मान मन्दिर में रहते थे । उन्होंने कहा कि मेरी कुछ सम्पत्ति दिल्ली में है, हम उसको सुलझाने जा रहे हैं । वे उसको सुलझाने गये और फिर वहाँ से लौटे ही नहीं, खुद ही सुलझ गये । अरे, इस सम्पत्ति को क्या कोई सुलझा सका है ? जो सुलझाने जाता है, वह स्वयं ही उलझ जाता है । समझ लो कि वह फिर वापस लौटकर नहीं आएगा । तुम समझते हो कि इतने लाख रुपये का मामला है किन्तु जब तुमने छोड़ दिया तो चाहे लाख हो, करोड़ हो, उससे तुम्हें क्या मतलब है ?

एक बार एक गुरु और चेला किसी नदी के किनारे संध्या को भजन कर रहे थे । उसी समय नदी में एक भालू बहा जा रहा था । भालू काले रंग का होता है तो चेले को वह कम्बल की तरह दिखा । उसने कहा – 'गुरुजी ! कम्बल बहता जा रहा है ।' गुरुजी ने कहा – 'तुझे उससे क्या मतलब, तू अपना भजन कर ।' चेला बोला – 'नहीं-नहीं, कम्बल तो बहुत बढ़िया है । जाड़े में ओढ़ने के काम आएगा ।' चेले ने गुरु की बात नहीं मानी और कम्बल के लोभ में नदी में कूद पड़ा । उसने कम्बल को पकड़ा लेकिन वह तो भालू था, उसने चेले को पकड़ लिया । अब तो वह चिल्लाया – 'गुरुजी, गुरुजी ।' गुरुजी ने पूछा – 'क्या है ?' चेला बोला कि मुझे कम्बल ने पकड़ लिया है । कैसे आऊँ ? गुरुजी ने कहा कि

कम्बल को छोड़ दे । चेला बोला कि मैं तो कम्बल को छोड़ता हूँ किन्तु कम्बल मुझे नहीं छोड़ रहा । इस तरह कम्बल के रूप में भालू ने उसे पकड़ लिया और नदी में डुबा दिया । इसी प्रकार जो व्यक्ति संसार की समस्या सुलझाने जाता है तो फिर संसार का कम्बल उसे नहीं छोड़ता है । मान मन्दिर में कितने ही लोग ब्रजवास करने के लिए आये, बीच में अपनी सांसारिक समस्या को सुलझाने के लिए घर गये तो फिर लौटकर नहीं आ पाए, यहाँ तक कि ब्रजयात्रा में भी नहीं आ पाए । **"वृन्दावन साँचो धन भैया । जहाँ श्रीराधा चरण रेणु की, कमला लेति बलैया ॥"** जिस वृन्दावन में श्रीराधारानी रहती हैं, जिनके चरणों की रज लक्ष्मीजी पाना चाहती हैं । जिन राधारानी को लक्ष्मी जी भी नहीं पा सकीं, उनके साथ ब्रज की गोपियाँ खेलती हैं । **"तिन संग गोपी नाचति गावति, मोहन वेणु बजैया । कामधेनु को क्षीर सिन्धु तजि, भजहु नन्द की गैया ॥"** छोटे-मोटे धाम नहीं, क्षीर सिन्धु - दूध का समुद्र, क्षीर सागर है, वैकुण्ठ आदि भी मिल जाएँ तो उन्हें भी छोड़ दो । ब्रज की गाय और उसका गोबर, कामधेनु से अधिक बढ़िया है । **"चारों मुक्ति कहा लै करिहौं, जहाँ यशोदा मैया ।"** स्वर्ग आदि तो छोटी चीज है, चारों मुक्ति – सालोक्य – गोलोक धाम में रहना, सामीप्य – भगवान् के समीप रहना, सारूप्य - कृष्ण जैसा रूप और सार्ष्टि – उनके जैसा ऐश्वर्य हो जाना आदि मिल जाएँ तो उन्हें भी छोड़ दो । इसको निष्ठा कहते हैं । ये वही ब्रज है । जब रामजी ने हनुमानजी से कहा कि हम अपने धाम साकेत में जा रहे हैं, तुम भी साथ चलो । हनुमानजी ने कहा – 'नहीं, मैं यहीं पृथ्वी पर रहूँगा ।' उन्होंने ऐसा करके दिखाया, हनुमानजी ने कहा –

**यावत् तव कथा लोके विचरिष्यति पावनी, तावस्थास्यामि मेदिन्यां तवाज्ञाम् अनुपालयन् ।**

जब तक आपकी कथा है, तब तक मैं आपकी कथा का श्रवण और कीर्तन करते हुए पृथ्वी पर विचरण करूँगा । इसलिए सब छोड़ दो, भगवान् के लोक में जाने का विचार भी छोड़ दो, यहीं ब्रज में रहो और कृष्ण गुण गाओ ।

लंकिनी ने हनुमानजी से कहा था – **"तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिअ तुला इक संग ।**
**तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग ॥"**

स्वर्ग और मोक्ष का सुख भी तराजू के एक पलड़े पर रखे जाएँ और दूसरे पलड़े पर सत्संग का एक क्षण मात्र का सुख रखा जाए तो वे सभी सुख सत्संग के क्षण मात्र सुख की बराबरी नहीं कर सकते । इसलिए भक्तों के साथ बैठकर कृष्ण गुण गाओ । यह सबसे बड़ी चीज है । **"अद्भुत लीला अद्भुत वैभव, साँचो शुकदेव कहैया ।"** ब्रज में भगवान् की मीठी-मीठी लीलायें होती हैं । व्यासजी कहते हैं कि मैं इस वन में चिल्ला रहा हूँ कि इतना बड़ा धन यह ब्रज वृन्दावन धाम मिल गया है, जो जन्म-जन्म में काम आएगा किन्तु मेरी सुनने वाला कोई नहीं है । सब लोग माया में ऐसा डूब गये हैं कि कोई सुनता नहीं है । **"आरत व्यास पुकारत वन में, थोरे लोग सुनैया ।"** व्यासजी कहते हैं कि मैं इस वन में चिल्ला रहा हूँ कि यहाँ बहुत बड़ा धन है, सब लोग इसे लूट लो किन्तु कोई सुनता ही नहीं है, लूटेगा क्या ?

किसी शहर में कथा होती है तो वहाँ लाखों लोग रहते हैं किन्तु थोड़े से ही लोग कथा में पहुँचते हैं । सत्संग का मिलना बहुत दुर्लभ है, यद्यपि इसमें कोई पैसा नहीं लगता है । "जप तप साधन कछु नहिं लागत, खरचत नहिं गठरी ।" भवसागर के पार होने में कोई पैसा नहीं लगता है, फिर भी – "थोरे लोग सुनैया" करोड़ों में कुछ लोग ही होते हैं, जो भवसागर के पार जाना चाहते हैं । बाकी तो सब इसी में डूबे रहना चाहते हैं । निष्ठा इसको कहते हैं कि ब्रज की इसी मिट्टी के लिए सोने के पहाड़ छोड़ दिए जाएँ, कामधेनु का क्षीर सिन्धु वैकुण्ठ छोड़ दिया जाए । हनुमानजी भगवान् के साथ साकेत धाम नहीं गये । भक्त तो बड़ा त्यागी होता है । उसको गोलोक आदि धामों में जाने की कोई आवश्यकता नहीं रहती । वह भगवान् से कहता है कि मुझे अपने नाम के प्रति रति दे दो, पृथ्वी पर स्थित इस वृन्दावन धाम के प्रति रति दे दो, मैं यहाँ की मिट्टी में पड़ा रहूँगा । "जय श्रीभट्ट धूर धूसरित तन, यह आसा उर धार ।" श्रीभट्टदेवाचार्यजी कहते हैं कि मैं इस ब्रज वृन्दावन धाम की मिट्टी में पड़ा हुआ तुम्हारा गुण गाता रहूँगा ।

जो भक्त इतना बड़ा त्यागी होता है, भगवान् सदा उसके ऋणी बने रहते हैं । उसके पीछे-पीछे घूमते हैं । गोस्वामी तुलसीदासजी ने कहा था – **"चहौं न सुगति सुमति सम्पति कछू रिधि सिधि विपुल बड़ाई । कुटिल करम लै**

**जाएँ जहाँ मोहि जहं अपनी बरियाई ॥"** मुझे सुगति भी नहीं चाहिए कि मरने पर अच्छी गति मिल जाए । मेरे कुटिल कर्म यदि मुझे नरक में ले जाएँ तो जाने देना । केवल तुम्हारे नाम का उच्चारण और तुम्हारी याद बनी रहे । सनकादिक मुनियों ने भगवान् से कहा था - "कामं भवः स्ववृजिनैर्निरयेषु नः स्ताच्चेतोऽलिवद्यदि नु ते पदयो रमेत ।" यदि हमारा चित्त भौंरे की तरह आपके चरणकमलों में ही रमण करता रहे तो अपने पापों के कारण भले ही हमारा जन्म नरक आदि में हो जाए, हमें इसकी कोई चिन्ता नहीं है । यही तो हम लोगों से नहीं हो पाता है । हालत मन की यह है कि मन्दिर में बैठे-बैठे भी सोचते रहते हैं कि आज मेरा यह काम है, वह काम है, जबकि दर्शन कर रहे हैं ठाकुरजी के अथवा कीर्तन में बैठे हैं किन्तु सोच रहे हैं कि आज ये काम बाकी है, आज वो काम बाकी है । चित्त ही तो कृष्ण में नहीं रमता है । भक्त के लिए तो मुक्ति और नरक बराबर है । उसका ऐसा विश्वास हो जाता है कि भगवान् का नाम मिल गया है, भक्तों के साथ हम भगवान् का गुणगान करते हैं तो हमें मुक्ति से क्या प्रयोजन ? सरग नरक अपबर्ग समाना । जहाँ तहाँ देख धरे धनु बाना ॥ भक्त के लिए स्वर्ग, नरक और मुक्ति बराबर हैं । वह सबमें अपने प्रभु को देखता है । इसलिए स्वर्ग, नरक उसके लिए बराबर हैं ।

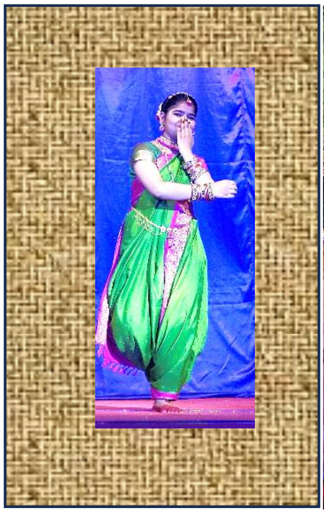

राधाष्टमी के पावन पर्व पर 'मान मंदिर कला अकादमी' द्वारा 'भक्त-नामदेव' नाटिका की भव्य प्रस्तुति

माताजी गौशाला में आयोजित हुई ‘रामकथा’
में संत-वैष्णवजनों का आगमन हुआ



RNI REFERENCE NO. 1313397- REGISTRATION NO. UP BIL-2017/72945-TITLE CODE UP BIL-04953 POSTAL REGD.NO. 093/2024-2026 श्री मान मन्दिर सेवा संस्थान के लिए प्रकाशक/मुद्रक एवं संपादक राधाकांत शास्त्री द्वारा ‘गुप्ता प्रिन्टिंग प्रेस, खरौट गेट, कोसीकलाँ, मथुरा. उत्तरप्रदेश’ से मुद्रित एवं मान मन्दिर सेवा संस्थान, गह्वरवन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.) से प्रकाशित,AGRA/WPP-12/2024-2026 AT 31.12.26